ठोक पीट कर वैद्यराज।

श्रीहिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारक मण्डली,
प्रयाग व खंडवा।

ठोक पीट कर वैद्यराज ।

(एक सभ्यहास्य-पूर्ण प्रहसन)

प्रसिद्ध फ्राँसीसी नाटककार मोलियर कृत

'दि डॉक्टर इन स्पाइट ऑफ हिमसेल्फ'

नामक नाटक के आधार पर

श्रीयुत हरिनारायण आपटे लिखित

'मारून मुटकून वैद्य बोवा' नामक पुस्तक का अनुवाद ।

अनुवादक

पं० ललीप्रसाद पाण्डेय ।

श्रीहिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारक मण्डली,

प्रयाग व खंडवा ।

१९६९

67
1912

प्रथमवार १००० प्रति.

मूल्य चार आना.

Printed by B. R. Ghanekar at the Nirnaya-sagar Press,
23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Baboo Manikchand Jain B. A. Vakil, Mantri,
Hindi Granth Prasarak Mandli, Khandwa, C. P.

निवेदन ।

मण्डली के प्रथम वर्ष की यह तीसरी पुस्तक सभासदों को भेट की जाती है । हिन्दी-साहित्य में ऐसी पुस्तकें प्रायः बहुत कम देखने में आती हैं, जिनमें सभ्य रीति से हँसी व मज़ाक किया गया हो । साहित्य में हास्यरस का निर्माण इस अभिप्राय से न किया गया था कि लोग उसके द्वारा लाभ न उठाते हुए हानि सहें; किन्तु वह इस अभिप्राय से किया गया था कि लोग सभ्य, विनोद–पूर्ण साहित्य का अवलोकन कर अपना मानसिक क्लेश दूर करें । फ्रान्स के प्रसिद्ध नाटककार **मोलियर** ने इस प्रकार के कई नाटक फ्रेंच भाषा में लिखे हैं। इन में से 'दि डॉक्टर इन स्पाइट ऑफ हिमसेल्फ,' The Doctor in spite of Himself. नामक नाटक बहुत उत्तम समझा जाता है। इसी के आधार पर **श्रीयुत हरिनारायण आपटे** ने मराठी भाषा में 'मारून मुटकून वैद्य बोवा' नामक एक प्रहसन लिखा है । प्रस्तुत पुस्तक इसी पुस्तक के आधार पर लिखी गई है । हम आशा करते हैं कि जो इस पुस्तक को पढ़ेंगे वे अवश्य कुछ समय के लिए अपनी चिन्ता क्लेशादि को भूल कर मानसिक प्रसन्नता का सुखानुभव करेंगे । साथ ही सामाजिक उपदेश भी प्राप्त होगा । पुस्तक को बहुत कुछ परिवर्तन करके इस प्रदेश की सामाजिक दशा के अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया गया है ।

विनीत—

खंडवा (मध्यप्रदेश)
कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी,
सं० १९६९ वि०

मंत्री,
श्रीहिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारक मण्डली ।

पात्र ।

पुरुष ।

पशुपतिदत्त चौबे	ठोक पीटकर वैद्यराज ।
रसिक बिहारी	एक शिक्षित महाशय ।
सूमड़चन्द	एक सेठ ।
मनोहरलाल	सूमड़चन्द का भावी दामाद ।
झुरउ, रमेसर	सूमड़चन्द के नौकर ।
धाँधू	सूमड़चन्द का पुराना नौकर ।
बक्खा, छब्बा	उस गाँव के काछी ।

स्त्रियाँ ।

चिरचिरी	पशुपतिदत्त चौबे की स्त्री ।
गुलाबदेई	सूमड़चन्द की कन्या ।
मथुरिया	पुरानी चाकरानी ।

ठोक पीटकर वैद्यराज।

प्रथम अङ्क।

प्रथम गर्भाङ्क।

स्थान—पशुपति दत्त चौबे का घर।

[चौबेजी अपनी स्त्री चिरचिरी के साथ झगड़ रहे हैं।]

चौबेजी—चल हट दूर हो। अब मैं तेरी एक भी न सुनूंगा। घर मेरा है; मैं ही सब तरह से मालिक हूं। इस घर में मेरी ही हुकूमत चलेगी। हं! हं!! हं!!!

चौबाइन—क्या कहा? घर तुम्हारा है? मैं इस घर में तुम्हारी एक न चलने दूंगी। यहां हुकूमत मेरी चलेगी; मैं ही घर की सब तरह से मालकिन हूं। औरों की तो बात ही क्या है। मैं तुम से भी अपनी इच्छा के अनुकूल काम लिया करूंगी—आप भूले किस मिजाज में हैं? मैं और स्त्रियों की भांति चुप बैठने वाली औरत नहीं हूं; इस बात को समझे रहना।

चौबे—ससुरी ने क्या 'हें हें खें खें' लगा रखी है। शास्त्रों का यह वचन मिथ्या नहीं है कि "अनृतं साहसं माया मूर्खत्वमविवेकता।" ये औरतें बिलकुल नरककुण्ड हैं।

चौबाइन—बस करो बहुत हुआ। अब ज्यादा मैं सुननेवाली नहीं, भला! काला अक्षर भैंस बराबर, और बड़े बड़े सास्तरों की बातें मार रहे हैं। भाड़ में जावें ऐसे सास्तर।

चौबे—अरी चल! भला देख तो मेरे समान शास्त्री पण्डित एक भी कहीं मिलता है? श्रीमान् शास्त्री चरखाप्रसादजी के पास रह कर मैंने पूरे

बारह वर्ष तक अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया है। वह कौन सा शास्त्र है जो मुझे मुखाग्र न आता हो? सुन अभी तुझे बानगी दिखलाता हूं। ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न आपो—

चौबाइन—बस कीजिए, मैं सुन चुकी तुम्हारा आपो और बापो। इस तरह अब्बा बब्बा तो मेरा छोटा रामू भी बोलने लगता है। यह कौन बड़ी बात है?

चौबे—बोलने लगता है, तो क्या हुआ? आखिर है तो वह श्रीमान् षट्शास्त्री राज्यमान् सर्वगुणगणालंकृत पण्डित का—

चौबाइन—बस करो, इस बड़बड़ को सुनते सुनते मेरे तो कान फूटे जाते हैं! कौन जाने मुंह है कि तोबरा?

चौबे—(मारने दौड़ता है) मेरे मुंह को तोबरा बताती है?

चौबाइन—हां, हां, क्या किसी का डर है?

चौबे—तुझे डर नहीं है? क्योंरी बेहया, तू ऐसी निडर हो गई अब?

चौबाइन—बस बस, मैं ऐसी नीच ऊंच बातें न सुनूंगी, समझे! न मालूम कैसी बुरी साइत में इनके साथ मेरी भाँवर पड़ी—दादा ने मुझे यदि किसी कसाई के हवाले कर दी होती तो अच्छा होता। यहाँ तो रात दिन गले पर छुरी चलती है।

चौबे—न जाने मेरे पिता कैसे सठिया गये थे कि ऐसी घूंस मेरे गले से बांध दी! अब मैं क्या करूं यदि मेरे पास चार पैसे होते तो ऐसी अच्छी स्त्री को विवाह लाता कि जिस का नाम? और फिर तुझ से उस के कपड़े धुलवाता।

चौबाइन—मेरी जूती को भीर पड़ी है किसी के कपड़े धोने की! ठहरो, कल से मैं तुम्हारी धोती भी न छाँटूंगी।

चौबे—तूं तो क्या, तेरे पुरखा धोवेंगे। समझी!

चौबाइन—देखा, आज कल बड़ा ही मुँह चलने लगा है भला! एक मैं ही ऐसी हूं, जो सब कुछ सहकर जी मसोस कर रह जाती हूँ, यदि

और कोई होती, तो-मेरी बात जाने दो-न मालूम पिछले जनम में कौन सी तपस्या की थी जो मेरे जैसी सहनशील स्त्री मिली है। और नहीं तो मेरे जैसी स्त्री के पति होने योग्य तुम में कुछ भी योग्यता नहीं है।

चौबे-अहा ! क्या सुशीला स्त्री! सारे गांव भर की खुरचन मेरे भाग में बदी थी। मेरे ऐसे पण्डित को ऐसी गदही मिली ! राम ! राम !!

चौबाइन-(ओंठ चबाकर) अब मुंह बन्द करते हो कि नहीं ? तुम्हारे मन में समानी क्या है ?

चौबे-मेरे मन में जो है सो है; तुझे क्या करना है ?

चौबाइन-और कुछ कहना नहीं आता ! दहिजार, घर में रोटी का टुकड़ा तक तो नहीं मिलता। सारी गृहस्थी इस गांजे भांग में ही बिलाई। गांव भर में लोग लुगाई गँजेड़ी भँगेड़ी कह कर थूँका करते हैं; पर तनिक भी लाज नहीं आती !

चौबे-चल, बड़ी गांववोंला का घमण्ड दिखाने चली है। केवल आठ दश बार चिलम पीता हूं; इतने में ही तेरी गृहस्थी फुँक गई ?

चौबाइन-घर में एक बर्तन तक नहीं रहा। जब देखो तब बाज़ार में रहन !

चौबे-अरे, तो मैं अपने ही घर की चीज़ें तो ले जाता हूँ, अभी औरों के घर की चीज़ें लेकर तो भाँग नहीं लाया ?

चौबाइन-एक छोटी सी गद्दी थी, वह भी न बची; परसों उसे भी ले गये ?

चौबे-तो इस में तेरा क्या नुकसान हुआ। अब गद्दी न रहने से तू जल्दी उठकर काम करने लगती है। ऊँघ में पड़ी रहने नहीं पाती ?

चौबाइन-घर में न तो एक चिन्दी रहने पाती है और न एक साबित बर्तन ? सारा घर उजाड़ दिया ?

चौबे-तो अच्छा किया या बुरा ? जब आज कल ही भाड़ा न देने के कारण मालिक ने मकान से निकाल दिया तो असबाब ढोने की दिक्कत तो नहीं उठाना पड़ेगी ?

चौबाइन–फिर भांग और गांजेके सिवाय कुछ नहीं सूझता ?

चौबे–परन्तु इस में मैं कितना मजे में रहता हूँ ? कभी तूने मुझे उदास भी देखा है ?

चौबाइन–अब मैं कहां जाऊँ; क्या करूँ ? मेरे पीछे चार लड़के बाले भी हैं ।

चौबे–पीछे क्यों, आगे क्यों नहीं करती ? मैं क्या रोकता हूं ?

चौबाइन–दिन भर लड़के बाले "भूख भूख" चिल्लाया करते हैं ।

चौबे–तो उन्हें खाने को क्यों नहीं देती मैं एक कोड़ा ले आऊं ? मुझे खाने पीने को अच्छा मिलना चाहिये, फिर किसी का कुछ भी हुआ करे ?

चौबाइन–इस भंगड़पन से कितने दिनों तक निर्वाह हो सकेगा; कुछ गृहस्थी की भी फिक्र करो ।

चौबे–देख, अब तेरी जीभ बहुत बढ़ने लगी है । उसे ज़रा लगाम चढ़ा ।

चौबाइन–मैं कहाँ तक बर्दाश्त करूँ, इस की कुछ हद्द भी तो हो ?

चौबे–देख इस तरह रिस न किया कर । इस से क्या लाभ ?

चौबाइन–तो क्या तुम यह समझ बैठे हो कि मैं तुम्हें किसी भी तरह रास्ते पर नहीं ला सक्ती !

चौबे–देख, मैं ज़रा तामसी हूं और तू इस बात को अच्छी तरह जानती ही है कि मेरा हाथ कैसा है ? फिर क्यों नाहक घर बैठे संकट बुलाती है ?

चौबाइन–मैं तुम्हारी इन धमकियों की कुछ पर्वा नहीं करूंगी । समझे ?

चौबे–जान पड़ता है, आज तेरी पीठ खूब खुजला रही है ।

चौबाइन–ज़रा हाथ तो लगावो फिर मैं आटे दालका भाव बतला दूंगी । बहुत मारने पीटने की धमकी देते हो !

चौबे–अब तू, बिना कुछ इनाम लिए शान्त नहीं होना चाहती, एसा मालूम होता है।

चौवाइन–तुम्हारे इस बकवादीपन को मैं खूब जानती हूं। मैं ऐसी डर जानेवाली नहीं हूं। आप निस्सन्देह रहें।

चौबे–प्रिये, मेरी प्राणाधिके, अब मैं बड़े प्रेम से तेरे गाल लाल करूंगा! और बड़ी ममता से तुझे एक लात मारूंगा, भला!

चौवाइन–चलो तुम्हारी क्या हिम्मत है? बस इस भांग के नशे में ही–

चौबे–देख भला! सोच ले!

चौवाइन–और चार बोरे गांजा फूंको!

चौबे–याद रख, अब पिटेगी!

चौवाइन–मेरी जूती को पीटो।

चौबे–तेरी जूती को क्यों? मेरे ही जूते से तुझे पीटता हूं।

चौवाइन–चार चार लोटे भांग, बोरे के बोरे गांजा। खाने के लिये ढेर भर। कानी कौड़ी पैदा करने की अक्कल—

चौबे–अब तेरी शामत आ गई; (यह कहकर उसे ठोकता है)।

चौवाइन–अरे दैयारे दैया! अरे मर गई मैं तो; अच्छा अब लगने दो, फिर बतलाती हूं। अरेरे! हाय!! हाय!!! इन हाथों पर गाज क्यों नहीं गिरती!

चौबे–हां, फिर बोलेगी। बोल, फिर बोल, हूं, हूं, [इतने में पड़ोसी बाबू रसिकबिहारी दौड़ते हुए आते हैं] रसिकबिहारी अरे अरे–चौबेजी हें! हें!! यह क्या कर रहे हो! बस बस, रहने दो। तुम तो बिलकुल नादानी का काम कर रहे हो। कोई अपनी स्त्री को इस बेदर्दी के साथ मारता है? यह बड़ी नादानी का काम है!

चौवाइन–(रोती आंसू पोंछती हुई) भला तुम्हें बीच में पड़ने के लिए कौन बुलाने गया था? तुम आये किस लिये हो ठलुए कहीं के? मुझे यदि मारा तो तुम्हारा क्या जाता रहा?

रसिक बिहारी–नहीं, मेरा तो कुछ नहीं गया ?

चौबाइन–फिर दौड़े किस लिये आए हो ?

रसिक बिहारी–हम से भूल होगई—हम—

चौबाइन–इस झगड़े में पड़ने की तुम्हें ज़रूरत क्या थी ?

रसिक बिहारी–तुम्हारा कहना ठीक है; हम से भूल हुई ।

चौबाइन–छिः कैसा लुचपन है । घरवाले ने यदि अपनी औरत को मारा पीटा, तो तुम्हें बीच में पड़ने की क्या ज़रूरत थी ? कोई अपनी दुलिहन को बिना ममता के थोड़े ही मारता पीटता है ? चलो, पीठ दिखलाओ ।

रसिक बिहारी–बहुत अच्छा, लो मैं जाताहूं ।

चौबाइन–तो जाते क्यों नहीं ? खड़े क्या झख मारते हो ?

रसिक बिहारी–कहता तो हूं कि ये चला ?

चौबाइन–दूसरों के बीच में पड़े बिना तुम्हें कल नहीं पड़ती ।

रसिक बिहारी–नहीं तो ?

चौबाइन–तब खड़े क्यों हो, जाकर अपना काम करो ।

रसिक बिहारी–देखो न, जाता तो हूं ।

चौबाइन–मुझे मार अच्छी लगती है ।

रसिक बिहारी–बहुत अच्छी बात है ।

चौबाइन–तुम्हें तो नहीं सहनी पड़ती ?

रसिक बिहारी–बिलकुल नहीं ।

चौबाइन–नाहक गड़बड़ मचाना तुम्हें बहुत सुहाता है । चलो निकलो यहां से ।

[जाने लगता है, पर बीच ही में रुक कर चौबेजी से प्रणाम करता है ।]

रसिक बिहारी–देखिये चौबेजी, हम से भूल हो गई इसीं से हम यहां चले आये । कृपा कर क्षमा कीजिये । आप अपनी स्त्री को खूब ठोकिये; इस में कुछ भी कमी न हो । इस काम में यदि आप कहें, तो मैं भी आप को खुशी से मदद दूंगा ।

चौबे–मुझे न चाहिए आप की मदद ।

रसिक बिहारी–फिर बात ही निराली है।

चौबे–मैं जब चाहूंगा, तब उसे मारूंगा, जब न चाहूंगा तब नहीं ।

रसिक बिहारी–ठीक है। ऐसा ही कीजिए ।

चौबे–यह मेरी स्त्री है, कुछ आप की तो है नहीं ? मैं तो अपनी स्त्री को उधेड़ूंगा, आप चाहे सो कहें ।

रसिक बिहारी–आप बहुत ठीक कहते हैं ।

चौबे–तुम्हें बीच में पड़ने की ज़रूरत नहीं ।

रसिक बिहारी–मंजूर है ।

चौबे–मुझे तुम्हारी बिलकुल ज़रूरत नहीं है ।

रसिक बिहारी–बहुत ठीक ।

चौबे–(मुँह चिढ़ाकर) बहुत ठीक, बहुत ठीक, क्या तुम्हारा सिर ! वह पहले से कह रही है, मैं कह रहा हूं, यह चला, अब जाता हूं फिर भी यहां बकबक कर रहे हो । अब झटपट चल दीजिये; नहीं तो अब मैं इसे छोड़कर आप के ऊपर ही लाठी का प्रयोग करता हूं । "अव्यापारेषु व्यापार" करने चले हैं; चलो निकलो (पकड़ कर बाहर ढकेलता है और फिर स्त्री की ओर बढ़ता है) चल आ, अब सुलह कर लें, जो हुआ सो हुआ, लड़ाई पूरी हो चुकी ।

चौबाइन–चलो बस रहने दो, मुझे यह वाहियाती बिलकुल नहीं सुहाती । नासकाटे ने ठोक ठोक कर मुँह और पीठ का चिला कर दिया ! और अब कहते हैं सुलह करलें ।

चौबे–चल रहने दे—इस में क्या रखा है ?

चौबाइन–नहीं मैं अब कभी नहीं—

चौबे–कभी नहीं ?

चौबाइन–हां, हां, कभी नहीं !

चौबे–मेरी प्यारी, यह क्या ?

चौबाइन–प्यारी बारी चाहे सो कहो। मैं अब कभी नहीं—

चौबे–अरी यह क्या! चल आ!

चौबाइन–देखो, अब नाम न लेना!

चौबे–अरी सुन तो सही, इस तरह रिसही न बन!

चौबाइन–बिलकुल नहीं। मैं अब तुरन्त बिगड़ उठूंगी।

चौबे–हुं: ऐसी, ज़रा २ सी बातों भी में कोई रिसाता है? आ, चल।

चौबाइन–चलो यहां से, अब तुम मेरा नाम भी न लेना।

चौबे–भला आज तक मैंने तेरा नाम कभी लिया था? अच्छा आ मैं कभी तेरा नाम न लूंगा शास्त्रों में भी लिखा है कि अपनी स्त्री का नाम न लेना चाहिये।

चौबाइन–मैं कहां ऐसी बातें बनाना जानती हूं। खूब हुआ, अति हो गई। आज तक हुआ इतना ही बस है। (रोती है) दहिजार! न एक दिन सुख से खाने पीने को मिले और न मीठी बात सुनने को?

चौबे–वाह! वाह! और जो अभी दिया है वह क्या है? अच्छा खाने को दिया मीठी मीठी बातें सुनाईं। चल, अब ये हंसी दिल्लगी की बातें रहने दे। ले अब मैं माफी मांगता हूं; यह देख तेरे पैरों पड़ता हूं, अब तो माफ कर।

चौबाइन–(हंसकर) रहने दो फिर वही सदा की बातें, और वे ही लटके। पर फिर कभी जो ऐसा हुआ तो—

चौबे–नहीं, नहीं, फिर ऐसा नहीं होगा। पर कल जो तुझे पिसौनी में चौअन्नी मिली है, वह तो दे।

चौबाइन–लो पेट में धरलो। (स्वगत) जो मैं असल चिरचिरी हूंगी; तो इस मार का बदला लिये बिना न रहूंगी।

चौबे–अहाहा! मेरी स्त्री कितनी भोली भाली है! यदि तू रोज ऐसा करे तो आज का सा समय कभी न आवे। आज की बातों का तू कुछ ख्याल न करना। जो सच्चा प्रेम होता है ना उसे इसी प्रकार कभी २ ठोक पी-

ट कर ठीक करना पड़ता है। यदि पुरुष अपनी प्रिया को न मारे पीटे तो फिर क्या नौकरों चाकरों को ठोके? अपने आदमी को मनुष्य जो चाहे सो कर सकता है; तू मेरी है मैं तेरा हूं, इसी से ऐसा हो जाता है। अच्छा तू ही बता, इस में कुछ झूठ तो नहीं है? अरी परसों मैंने एक अखबार देखा था, उसमें लिखा था कि एक विद्वान पुर्फेसर ने भी अपनी स्त्री को ठोका था। और इस बात को उसने एक बड़ी भारी सभा में खड़े होकर बड़े घमण्ड से प्रकट किया था। हां, उसने उसे प्रेम से पीटा था! फिर बता मैंने तुझे निठुरता से तो नहीं मारा? जा अब घर में जाकर काम काज कर। मैंने आज यह प्रयोग केवल इस लिये किया है कि आगे ऐसी गड़बड़ फिर कभी न हो। क्यों चौअन्नी कैसी जल्दी दे दी आज? यदि फिर कभी मैं ऐसा मांगूं तो ऐसा न करना, जिस में आज का सा झगड़ा हो। अच्छा जा अब मैं ज़रा जंगल की तरफ जाता हूं। कुछ लकड़ियां बीने लाऊंगा और हो सकेगा; तो कैथा व बेर लेता आऊँगा।

[जाता है]

दूसरा गर्भाङ्क।

[चिरचिरी चौबाइन बगल में कलसा दबाये हुए रास्ते में चली जा रही है]

चौबाइन—कुछ ही क्यों न हो; अब मैं आज की इस मार के बदले इन के दांत खट्टे करने की तरकीब सोचती हूँ जिस से इन्हें भी खबर रहे कि किसी से पाला पड़ा था। और इन के हमेशा के लिये कान खड़े हो जावें रात दिन कौन इस मार को सहे। नाक में दम कर रक्खी है। जब देखो तब लाठी लिये तैय्यार हैं! यह तो जिन्दगी भरका रोना है। अब इन की अक्ल ठिकाने करने की कोई तजबीज करनी चाहिये, जिस से कुछ दिनों को ये छड़क तो जावें। मेरे हाथ से ऐसा कोई भी यत्न नहीं हो सकता! यह बात नहीं है; पर हाँ अभी उस से काम न होगा। अब तो किसी ऐसे उपाय से काम लेना चाहिये जो फतह कर के ही रहे। अब तो आनन फानन काम ही होना चाहिये। मैं अब ऐसी फाग खेलना चाहती हूँ; जिस में

मेरे ऊपर एक भी छींटा न आने पावे। ऐसा कौन उपाय है? [इसी प्रकार की बातें सोचती हुई जाती है]

झुरउ–भाई रे भाई! बड़ी मेहनत का काम है! जानते हो इस विकट काम के कर डालने में इनाम क्या मिलेगा?

रमेसर–तो भाई करें ही क्या? जब नोकरी कर ही ली है; तब उसे ईमानदारी से ही बजानी चाहिए। रामायणका वचन है "सेइय स्वामि सकल छल त्यागी"। दूसरे एक बात औरं भी तो है। गुलाबदेइ को जितनी जल्दी आराम हो; उतना ही अच्छा है। क्योंकि उसके चङ्गे होते ही विवाह होगा। यद्यपि विवाह में मिहनत थोड़ी न होगी तथापि इनाम भी तो ऐसा ही मिलेगा। खूब मौज होगी शादी में, इन लोगों के यहां विवाह शादी में यही तो मजा है। बाप चाहता है कि मैं लाला खूबचंद के लड़केको अपना जमाई बनाऊँ और गुलाबदेइ मूलचन्द के भतीजे मनोहर को चाहती है। पर बाप यह बात कभी मानने का नहीं।

चौबाइन–(स्वगत) कोई उपाय ऐसा सूझ पड़े जिस से मैं आज इन से आज की मारका बदला अच्छी तरह भँजा सकूँ तो ठीक हो। क्यों कि इन्हें अब मारने पीटने की बड़ी लत पड़गई है। अरेरे! पीठ में अब तक दर्द है।

झुरउ–(रमेसर से) भाई! मालिक तो हो रहे हैं पागल उन के सिर पर जिद्द सवार है। न जाने कितने वैद्य और हकीम दवा कर के हार मान बैठे, उस गांव से वह डाक्टर भी आया और रोगी को आराम न पहुँचा सकने के कारण लज्जित होकर लौट गया। पर मालिक उसी धुन में हैं; "जाओजी और किसी वैद्य को ढूँढ़ ले आवो"। हम कहीं से नया वैद्य बनाकर खड़ा कर दें; क्या हम विधाता हैं?

रमेसर–वे ऐसा न कहें तो कहें ही क्या? मनुष्य से जितने उपाय हो सक्ते हैं उतने वे कर रहे हैं। और भई कभी कभी तो ऐसा होता है कि जहां से किसी प्रकार की आश ही न हो; वहीं से काम निकल जाता है।

चौबाइन–(पुनः स्वगत) कुछ भी हो, मैं तो अब बदला लिये बिना न रहूँगी,–आज तभी अन्न पानी को हाथ लगाऊँगी; जब इस का प्रबन्ध कर लूंगी। आह! कैसी निठुराई से मारा! आग लगे ऐसे हाथो में। मैं अब न मानूँगी, चाहे कुछ भी हो। (इसी प्रकार कहती हुई चली जाती है कि आगे न देखने से रमेसर का धक्का लगता है।) अरी बाई, लोग आज कल बिलकुल ही बेशरम ढीठ हो गये हैं। आखों से काम लिया करो; पट्टी न चढ़ाये रहो। मैं अपनी फिकर में घुन हो रही थी इस से ज़रा चकरा गई; पर तुम तो सावधान थे। तुम क्यों न ज़रा हट गये? इस से क्या तुम्हारी जाति घटी जाती थी?

झुरउ–क्या तुम्हें ही रंज और फिक्र ने घेर रक्खा है? दुनिया भर की चिन्ता का ठेका तुम्हीं ने थोड़े ले रखा है? हम खुद एक चिन्ता को लिये हुए भटकते फिरते हैं। हमें जिस चीज़ की चाह है, यदि वह मिल जावे; तो एक चिन्ता से पीछा छूट जावे?

चौबाइन–तुम किसे खोजते फिरते हो? यदि मुझे मालूम होगा; तो मैं ही बतला दूँगी–मुझ से जो मदद हो सकेगी; मैं अवश्य करूँगी।

झुरउ–हाँ, मैं अभी बतलाता हूँ। शायद यहां तुम्हें कुछ पता मालूम हो। देखो हमारे मालिक सेठ सूमड़चंद की लड़की बीमार है। उसे बीमारी तो कोई है नहीं, पर एकाएक उस की बोली बन्द हो गई है। वह गूंगी हो-रही है। यदि हो सके; तो ऐसा कोई होशियार वैद्य बतलाओ जो उसे फिर बात चीत करने योग्य बना दे। ऐसे ही वैद्यराज को हम ढूँढ़ते फिरते हैं। कितने ही ग्रामों की धूल छान चुके? हमें यहां आये दो दिन हुए, हमारे मालिक का गांव यहां से दूर नहीं है। चारों ओर के वैद्य आकर देख गये। पर किसी का उपाय नहीं चला। सभी माथा पीटकर चले गये। परंतु कुछ दवाइयां जो गांव खेड़ों के साधारण कोरी, चमार और काछी मालियों को मालूम होती हैं, वे ही बड़े बड़े राजवैद्यों को मालूम नहीं होतीं; इस लिये हम ऐसे ही गुणी को खोजते फिरते हैं; मिल जाय तो अच्छा हो?

चौबाइन–(स्वगत) वाह ! क्या मानता लेते ही देव प्रसन्न हुआ है मुझे आज इन्हों ने मारा है–अच्छा उपाय सूझा । अब इन के दांत खू ही खट्टे होंगे । (प्रकट) तुम्हारी बड़ी किस्मत है जो यहां अकस्मात् मुझ से भेंट हो गई । नहीं तो न मालूम, तुम्हें और कितना भटकना पड़ता । इस गांव में एक ऐसे ही वैद्यराज रहते हैं । जिस रोगी को चङ्गा करने में स्वयं धन्वन्तरिजी हिचकिचाते हैं; उसे ये बात की बात में निरोगी कर देते हैं मानो दवाइयां इन के हाथ में नाच रही हों, बलिहारी है !

झुरउ–परमेश्वर तुम्हारा भला करे । जल्दी बतलाओ वे कहां रहते हैं और उन का घर कहां है ?

चौबाइन–इस समय तो वे नदी पार जंगल में या तो पत्ते तोड़ते होंगे यां पत्तलें बनाते होंगे । शायद लकड़ियां काट रहे हों ।

झुरउ–(अचरजसे) अरे कहती क्या हो ? लकड़ियाँ काटते होंगे ! वैद्य कहीं लकड़ियां काटते फिरते हैं ?

रमेसर–हां ! तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि वे बनस्पति खोजते होंगे ।

चौबाइन–नहींजी, वे जरा लहरी आदमी हैं । जो दिल में आता है वही कर बैठते हैं–इसी से लोग उन्हें विक्षिप्त सा समझते हैं । वे इतने विक्षिप्त, लहरी और मनमोजी हैं कि कुछ कहते नहीं बनता । देखने से कोई एकाएक नहीं जानेगा कि ये वैद्य हैं–इनमें ऐसी करामात है । कभी २ तो वे नङ्गे बदन घूमा कहते हैं ! उन्हें अपनी विद्या छिपाने की बड़ी लालसा रहती है, इस से वे सदा यही कहा करते हैं कि "मुझे कुछ नहीं आता जाता–मैं कुछ नहीं जानता" । यही एक बुरा दुर्गुण है, जिस से लोगों में उनकी प्रसिद्धि जितनी होनी चाहिये, उतनी नहीं हो सकी । एक बात और यह है कि यदि कुछ भी क्यों न करो, वे यह कभी भी नहीं कहते कि "हां हम वैद्य हैं, हम रोगों की अच्छी चिकित्सा करते हैं, इस बात को ये कभी मंजूर ही नहीं करते ! भगवान ने उन्हें ऐसा अमूल्य

गुण देकर यह जो दुर्गुणरूपी परदा डाल दिया है, इस से वे किसी काम के नहीं रहे! भगवान् की लीला बड़ी विचित्र है; क्या किया जावे!

झुरउ–ऐसे बड़े आदमियों में एक आध दुर्गुण होता ही है। उन के सिर में एक आध सनक सवार रहती ही है।

चौबाइन–औरों का हाल तो मैं जानती ही नहीं, पर हां, इन का आँखों देखा हाल है। मुझे कहते हँसी आती है कि कभी कभी उन से यह बात कहलाने में कि हम "वैद्य हैं, दवा देते हैं" उन्हें ठोकना पड़ता है! तब कहीं वे इस बात को स्वीकार करते हैं। यदि मेरी बात मानों, तो हाथों में लाठी लेकर ही तुम लोग उन के पास जाना। यदि वे यह रटनें लगें कि "मैं वैद्य नहीं हूँ; मैं दवाइयां नहीं जानता, मुझे किसी भी रोग की पहिचान नहीं है।" तो बिना लाठियों के और कोई उपाय नहीं है। जब अच्छी तरह पीठ पूजी जावेगी, तब वे कबूल करेंगे–नहीं तो सिर पीटकर भले ही मर जाओ; वे ज़रा भी नहीं पिघलेंगे। यहां आसपास के गांववाले लोग उन का स्वभाव जाने बैठे हैं। इस लिये जब जिन्हें इन की चाह होती है, तब वे लाठियां लेकर इन्हें खदेड़ ले जाते हैं और अपना काम करा लेते हैं।

झुरउ–भई बड़े अद्भुत आदमी हैं!

चौबाइन–हैं तो सही अब इस का उपाय ही क्या है? पर हां, जहां एक बार वे रास्ते पर आगये, तहां काम फते ही समझो। फिर बार बार उनकी पूजा नहीं करनी पड़ती। फिर तो वे गऊ की नाईं सीधे हो जाते हैं, कैसा ही रोग क्यों न हो; बिना आराम किये नहीं रहते।

झुरउ–भला उनका नाम क्या है?

चौबाइन–(स्वगत) अब क्या कहूं, बड़ी कठिनाई है! उनका नाम कैसे लूं? (प्रकट) तुम्हें उनके नाम से क्या करना है? मैं उन की हूबहू हुलिया बतलाये देती हूँ। जिससे तुम देखते ही उन्हें पहिचान लोगे देखो उन के बड़े २ दो दांत निकले ही रहते हैं। मोटे मोटे होठ हैं और सारे

शरीर में रोम खड़े हैं। दाढ़ी के वाल अंगुल २ बढ़े हुए। धोती मुशकिल से घुटनों तक।

झुरउ–वाह! बड़ी बिकट सूरत बनाये रहते हैं!

रमेसर–पर यह तो बतलाओ, उन्हें सचमुच वैदगी आती है? उन्हें इस विषय का ज्ञान है या हमें यों ही भटका—

चौबाइन–मुझे पूरा विश्वास है, तभी तो मैं तुम से कहती हूँ; नहीं तो मुझे करना ही क्या–तुम्हारी भलाई का उपाय बतलाये देती हूँ; मन में आवे करो, मन में आवे न करो। मैं कुछ जबरदस्ती तो करती नहीं हूं। अभी छह महीने की बात है जब इसी पास के गड़बड़गंज में एक औरत-मुझे उस वाहियात रोग का नाम नहीं आता–बीमार थी धनवान होने के कारण न जाने कहां कहां के वैद्य और हकीम आये, पर सभी हार मान कर अपनासा मुंह लेकर चले गये; किसी से कुछ न हुआ। तारगांव से एक गोरा डाक्टर आया, पर वह भी कुछ न कर सका। अन्त में वह कोई चार घंटे तक निर्जीव पड़ी रही। इतने में किसी ने इनका पता लगा-कर इन से दवाई दिलवाई। दवाई देते तो देर लगी, पर आराम होते देर न लगी। चट से वह आंखें मलकर उठ बैठी और बातचीत करने लगी। लोगों को बड़ा अचरज हुआ; सभी देखते रह गये। वह अभी जींती जागती है, जो चाहे जाकर देख ले और विश्वास कर ले।

रमेसर–वाहवा! भई बड़ा अचरज है!

झुरउ–क्या कहना है दवा क्या दी मानो संजीवनी खिला दी!

चौबाइन–बिलकुल सच है। एक लड़का यहां से तीन कोस पर पहाड़ी से नीचे गिर पड़ा। लड़के के हाथ पैर टूट कर चूर चूर हो गए–एक भी हड्डी साबित न रही। डोली में रखकर लड़के को इन के पास ले आये; नहीं मालूम इन्हों ने कौनसा तेल मल दिया कि वह कूदता हुआ मजे में चला गया।

रमेसर–ओह! ऐसी बातपर सहसा विश्वास भी नहीं हो सकता।

झुरउ–तब तो अश्विनीकुमार का अवतार ही कहना चाहिये।

चौबाइन–इसमें सन्देह ही क्या है?

झुरउ–कुछ भी हो अब उन का पता जल्दी लगाना चाहिये। चलो मुफ्त में देर करने से लाभ नहीं है। 'शुभस्य शीघ्रम्'।

रमेसर–तुम ने हमें यह पता बतला दिया सो बड़ी कृपा की; हम तुम्हारा उपकार कभी न भूलेंगे।

चौबाइन–इस में उपकार काहे का? परस्पर एक दूसरे की सहायता अवश्य करनी चाहिये यही मनुष्य का धर्म है। पर हां, मैंने जो कहा है, उस पर ध्यान रखना; नहीं तो सारा काम चौपट हो जावेगा। देखो मैं तुम्हें उन का नाम भी बतलाये देती हूं। (स्वगत) यदि बतला दूंगी तो क्या हानि है? अगर इन्हों ने किसी और से पूंछा तो सब मामला फिस हो जावेगा और मढ़े ढोल की पोल खुल जावेगी। और यहां सुनने ही कौन बैठा है? (प्रकट) लोग उन को (ज़रा रुककर) पशुपतिदत्त चौबेजी महाराज कहते हैं।

रमेसर–पशुपतिदत्त चौबेजी? और सिर्फ लाठियों की ज़रूरत है। यदि मुलायम पूड़ियां करने के लिये कुछ थोड़ासा मोइन देना पड़े तो क्या हम इस में चूक सकते हैं? अब तुम इसकी चिन्ता न करो।

चौबाइन–नहीं, लाठियां पड़ते ही वे रोने पीटने लगेंगे, गिड़गिड़ावेंगे, और मुझे भय है कि कहीं तुम उनके झांसे में न फँस जाना मैं फिर भी तुम्हें समझाये देती हूं कि खबरदार उन की बातों में न आ जाना। क्यों कि वे बड़े लटकेबाज़ हैं। समय पाकर वे रोने भी लगेंगे और औषधियों की उन्हें इतनी जांच है कि कितनी ही मार उन पर पड़ा करे, पर वे उसे सहते चले जावेंगे। ज़रा सी बूटी लगाकर वे फिर चङ्गे हो जावेंगे।

रमेसर–अब तुम इस की कुछ भी चिन्ता न करो। हम समझ

लेंगे। और जब तक हम अपने मालिक की लड़की का रोग दूर न कर लेंगे; तब तक इन्हें न छोड़ेंगे। क्यों भाई झुरउ! आज अच्छे मुहूर्त पर घर से निकले। अब तो हमारा इनाम विधाता भी नहीं छीन सकता।

[एक ओर दोनों प्रस्थान करते हैं-दूसरी ओर से चौबाइन जाती है]

तीसरा गर्भाङ्क।

[स्थान-जंगल, चौबेजी गांजा पीकर तमाखू की पीक डाल रहे हैं और युगल जंघाओं को बजाते हुए भांग के नशे में गा रहे हैं। पास ही थैली रक्खी है जब मन में आता है धुन लगाये पत्तल सीते बैठते हैं,]

चौबे-(गाता है) सा! सा रे गा (खांसता है) हाँ, हाँ हाँ।

[इतने में रमेसर और झुरउ प्रवेश करते हैं।]

झुरउ-भई, किसी के गाने की आवाज सुनाई देती है

चौबे-(फिर से खाँस कर गाता है) बस! बस!! थैली मेरी रे हाँ! (ज़ोर से हँसता है।)

बड़े भाग की मेरी थैली आई मेरे हाथ रे।
जिस के तीनों पुर्त्त अनोखे भरी सुधा जिस में है रे॥
एक ओर है भांग तमाखू गांजा दूसरी ओर रे।
तीन बूटी बड़े मजे की जो पावे बड़ भागरे॥
दूध, मलाई और जलेबी हैंगी बड़ी निकामरे।
एक कली गांजे की दम भर कर देगी सब कामरे॥
स्वर्गधाम में सुरगुरु को जब मिला न इस का स्वाद रे।
धरती पर धरकर मेरा तन आया लेन प्रसाद रे॥

(खूब जोर से हंसता है) आहाहा! बम् शंकर! वैरी साले को तंग कर। (तंबाखू पिच्च पिच्च करता हुआ फिर गाता है)

सब भँगेड़ी मिल कर चलो सिर पर सबजी बाँध के।
दमड़ी की तुम भंग ले लो, काली मिर्चे माँग के ॥
घोंट घोंट कर त्यार किया, लोटा भरा छान के ।
सब भँगेड़ी पीने बैठे; पी गये लोटा तान के ॥

वाहरे हम! (पेट पर हाथ फेर कर प्रसन्न होता है और फिर ता है।)

भोलानाथ पुराने भंगड़ पियें जहर का प्याला।
तौहूं मिली शान्ति ना उन को, गये प्रभू के पासा ॥
पाय ज्ञानवल्ली को तब ये हो गये शीतल शशि-मौली ।
जायं भुलानी गंग जटा में, तौहूं रहे शान्त शूली ॥
थैली रहे पास जो मेरे सर जावें सब काम ।
वैद हकीम डाक्टर सिगरे हो जावे बेकाम ॥
और किसी की बात कहूं क्या धन्वन्तरि लुकमान ।
जिच्च होय कर भागें हम से मन में हारी मान ॥

चलो भई, फेर छनेगी—

भँग सबेरे फेर छनेगी ॥

वाह वाह! यदि यह थैली मेरे पास सर्वदा बनी रहे तो मैं किसी को कुछ भी न समझूं। मेरा सारा आनन्द, मेरा सब ऐश्वर्य—यही क्यों मेरे प्राण भी तो इसी एक थैली से हैं।

झुरउ–(रमेसरसे) जान तो पड़ता है कि यह वही मूर्ति है।

रमेसर–मुझे भी ऐसा ही जान पड़ता है। चलो अच्छा ही हुआ, बिना भटके इन्हें खोज लिया।

झुरउ–आओ, अब इन के पास चलें।

चौबे–(पीनक में गा रहा है)

थैली पास रहे जो मेरे— ....

....

.... **—धन्वन्तरि, लुकमान।**

भँग सवेरे फेर छनेगी।

(थैली को निहार २ कर गाता जाता है। इतने में दो नये आदमियों को देख कुछ धीमा सुर करके गाता है; पर जब उसने देखा कि ये दोनों हमें ही इकटक देख रहे हैं तो कुछ चिन्तासी करता है) अरे, इन के मन में है क्या ?

झुरउ–भाई रमेसर, हमें तो अब बिलकुल सन्देह नहीं है, ये ही हैं वे वैद्यराज। धन्वन्तरी का अवतार

रमेसर–हां, यही हमारा निश्चय है। पूरे गुण इन में झलक रहे हैं। मालूम होता है यहां जड़ी बूटी इकत्र करने आये हैं। (दोनों पास जाकर चौबेजी को प्रणाम करते हैं।) परंतु वह इस भयसे थैली को एक ओर से उठाकर दूसरी ओर रखता है कि कहीं ये उठा न लें। इतने में रमेसर उसी ओर से झुककर प्रणाम करता है। तब वह थैली को उठाकर अपने आगे गोद में छिपाता है। (यह काम होते समय चौबेजी की हस्त–कौशल क्रिया बड़ी आनन्द-वर्धक थी।)

चौबे–(स्वगत) अरे, ये मेरी ओर देख कर कैसी काना फूसी कर रहे हैं–कुछ माया जान नहीं पड़ती।

झुरउ–महाराज, क्या आप ही को लोग पशुपतिदत्त चौबेजी कहते हैं।

चौबे–क्यों ?

झुरउ–क्यों नहीं, मैं पूछता हूं। पशुपतिदत्त चौबे आप ही का नाम है न ?

चौबे–(एक एक बार झुरउ रमेसर को निहार कर) तुम पहले

यह बतलाओ कि पशुपतिदत्त चौबेजी महाराज से तुम्हें क्या काम है; पीछे उत्तर मिलेगा कि "हाँ" या "नहीं" ।

झुरउ–मैं उन को नुक़सान पहुँचाने नहीं आया हूं–हो सकेगा तो मुझ से भलाई ही होगी ।

चौबे–तब यह मेरा ही नाम है और मैं ही श्रीमान् पण्डित पशुपतिदत्त चौबे हूं ।

झुरउ–वाह ! वाह !! बड़ी अच्छी बात हुई जो आप से इतनी जल्दी भेट हो गई । हमारा कुछ काम है, लोगों ने कहा है कि वह आप से ही होगा; इसी लिये हम आप के पास आये हैं । अब उसे कर देने की कृपा कीजिये ।

चौबे–यदि मुझ से कुछ हो सके तो मुझे बिलकुल तैयार समझो । मेरी तो यह जीविका ही है !

झुरउ–आप के समान परोपकारी सज्जन संसार में बहुत ही थोड़े हैं। अच्छा चलिये उठिये ।

रमेसर–चलिये हम लोगों को दुःख से मुक्त कीजिये ।

चौबे–(स्वगत) भइ, आज है भी तो क्या यह ? (उठता है)

झुरउ–इस में आप को अचरज नहीं करना चाहिये कि हम लोग आपको यहां ढूँढते चले आये । क्यों कि गुणी लोगों के पीछे लोग सदैव रहते ही हैं । हम ने आप की बड़ी प्रशंसा सुनी है ।

चौबे–प्रशंसा तो कुछ नहीं, मैं ऐसा जानता ही क्या हूं ? पर हां, यहां दश पांच ग्रामों में मेरे समान कथा कहनेवाला और पूजा पाठ करनेवाला कर्मकाण्डी पण्डित न मिलेगा ।

झुरउ–हां ! और—

चौबे–मैं कौनसी कथा नहीं कह सकता ? सत्यनारायण, महालक्ष्मी, हरितालिका, प्रभृति व्रतों की कथायें मेरी जिह्वा पर नृत्य करती हैं । और श्राद्ध, तर्पण, हवन सभी कामों को मैं बड़ी सरलता से करता कराता

हूं। इसी से लोगों की मेरे ऊपर भक्ति है। मेरे यजमान मुझे बहुत चाहते हैं।

झुरउ–उँह! परंतु हम तो इस मतलब से नहीं आये हैं।

चौबे–मैं घर घर भटकनेवाला भिक्षुक अथवा भोजन-भट्ट नहीं हूं। मैं बड़ी विधि से पूजन कराता हूं, इसी से दक्षिणा भी चोखी लेता हूं।

झुरउ–आप के सम्बन्ध में सब जान चुके हैं।

चौबे–तब तो फिर आप सब जानते ही हैं। मेरी दक्षिणा में पीछे से कुछ गड़बड़ न होनी चाहिये।

झुरउ–महाराज, क्यों नाहक हम से दिल्लगी कर रहे हैं?

चौबे–तब कोई और घर ढूंढिये। गांव में ब्राह्मणों की कमी नहीं है। पर ऐसे ही मिलेंगे जो शुद्ध शुद्ध संकल्प तक नहीं पढ़ सकते। वेष से पण्डित हैं, पर हैं अक्षरशत्रु।

रमेसर–महाराज! पण्डिताई और दक्षिणा की बातों में क्या रक्खा है? छोड़िये इस चर्चा को।

चौबे–छोड़ें कैसे? इसी से तो हमारी जीविका होती है। हम ने पहले ही कह दिया है जिस में कि पीछे से झगड़ा न हो। कम से कम मैं दो रुपया दक्षिणा लूंगा। बोलो मंजूर हो तो चलूं।

झुरउ–महाराज, बहुत हुआ, अब दिल्लगी न करो।

चौबे–यह बात कभी नहीं हो सकती। अगर दो रुपया दक्षिणा देना मंजूर हो, तो मैं चलने के लिये तैय्यार हूं। मैं दो क़िस्म की बात करना नहीं जानता। जब अच्छा काम कराया चाहते हो, तब खरी दक्षिणा देते क्यों छाती फटती है?

झुरउ–महाराज, आप यह कहते क्या हैं? जब आप सरीखे विद्वान, ज्ञानी और गुणी लोग इस प्रकार अपने गुणों को छिपाये बैठे रहेंगे तो लोगों के रोगों का परिहार कैसे होगा? उन के प्राण कैसे बचेंगे? रोगों की परीक्षा और औषधियों का इतना ज्ञान, जितना कि आप को है यदि

किसी और को होता तो न जाने उसने अब तक कितना धन और यश पैदा कर लिया होता? क्यों आप नाहक छिपाते हैं?

चौबे–अरे रे! जान पड़ता है, यह आदमी पागल हो गया है।

रमेसर–यह लो, मैं आप के चरण छूता हूं; कृपा कर हम से न छिपाइये।

चौबे–भाई, तुम्हें हो क्या गया है, जो तुम ऐसी बातें कर रहे हो?

रमेसर–महाराज, इन लटकों में हम नहीं फँस सकते? हमें पूरी जानकारी हो चुकी है। इसी से कहते हैं कि इन ढोंगों से काम न सरेगा।

चौबे–जब तुम्हें अच्छी जानकारी है तो बक क्या रहे हो? तुम लोगोंने मुझे समझ क्या रक्खा है?

झुरउ–आप क्या हैं, सो हम अच्छी तरह जानते हैं। आप नामी आमी वैद्यराज हैं और हैं क्या?

चौबे–(निराशा से) चलो हटो, रास्ता लो अपना, नाहक हमारा समय बरबाद किया! न मैं वैद्य हूं और न कुछ जानता हूं।

झुरउ–(स्वगत) जान पड़ता है, इन्हें वह लहर आगई। (प्रकट) सुनिये महाराज, मैं दोनों हाथ जोड़ और पैर छूकर विनती करता हूं कि आप मुझ से इस बात के छिपाने का उद्योग न करें। अब तो भलाई इसी में है कि आप हमारे साथ सीधे चले चलें।

चौबे–सीधे न चले चलेंगे तो तुम हमारी क्या जागीर छीन लोगे? बड़ी डाँट दिखाने आये हैं!

झुरउ–महाराज, लाचार होकर सभी कुछ करना पड़ेगा। कहावत है कि "मरता क्या न करता" इसी से कहता हूं कि महाराज, प्रेम से चले चलिये–नहीं तो जैसे बनेगा हम आप को ले जावेंगे।

चौबे–सुनो जी, तुम्हें जो करना हो करो, देखें तुम हमारा क्या किये लेते हो? कोई ज़बर्दस्ती है? अच्छी तरह समझाया बुझाया पर विश्वास ही

नहीं करते ! क्या मैं गङ्गा उठाऊं या जनेऊ की कसम खाऊं ? अब तुम्हें जो भरी हो कर लो ! देखूं तुम्हारी लाचारी मेरा क्या किये लेती है ? न मैं वैद्य हूं; न मुझे दवाइयों की पहिचान है और न मैं यही जानता हूं कि तुम क्या माथा पच्ची कर रहे हो ?

झुरउ–(रमेसर से) अब तो बिना वह उपाय किये इन का रास्ते पर आना मुश्किल दिखता है । (प्रगट) महाराज, कान खोलकर सुनिये; मैं एकबार फिर आप के पैर छूता हूं और हाथ जोड़कर कहता हूं कि आप अब इस ढोंग को छोड़िये–इसी में आप की और हमारी सभी की भलाई है ।

रमेसर–चौबेजी महाराज, अब आप कृपा कर सीधी तरह से इस लीला को छोड़िये और होश दुरुस्त कर हमारी बात पर राज़ी हो जाइये ।

चौबे–(स्वगत) अब तो ये हमें पागल बनाये न रहेंगे। बड़े फन्दे में फँसे।

रमेसर–महाराज, जो बात हमें अच्छी तरह मालूम हो चुकी है, उसे छिपाने में आप ने क्या भलाई सोची है ?

झुरउ–महाराज, आप ये चालें क्यों चल रहे हैं ? इस से कुछ भी लाभ न होगा !

चौबे–भाई हम एक बार जो कह चुके हैं; उसी पर विश्वास रक्खो, तुम नाहक हमें बकवाद कर सता रहे हो । मैं फिर भी कहता हूं कि "न मैं वैद्य हूं और न दवा दारू जानता हूं"।

झुरउ–तो आप वैद्य नहीं हैं ?

चौबे–नहीं ।

रमेसर–आप दवा देना नहीं जानते ?

चौबे–नहीं, नहीं, नहीं, लाख बार तो कह दिया कि नहीं ।

झुरउ–अब बिना उस के जब काम ही नहीं चलता, तब वही कहावत ठीक ही है कि सीधी अँगुली से घी नहीं निकलता ।

[दोनों आदमी लठियों से उसे पीटते हैं]

चौबे–अरे रे ! मारडाला !! मैं मुफ्त मारा गया, भइ मुझे तुम जो कहो, मैं वही हूं, छोड़ो मुझे ।

झुरउ–क्यों नाहक विपद मोल लेते हो, मैं तो पहले ही कह चुका हूं । आपको बहुत सिखाया पढ़ाया–समझाया बुझाया पर आप तो किसी भी तरह राजी नहीं होते हमें लाचारी से ऐसा करना पड़ा ।

रमेसर–आप हमें ऐसा करने के लिये लाचार न करें ?

चौबे–भइ, तुम्हारे मन में जो बात हो, सो एक बार साफ़ २ कह-डालो; नाहक दिल्लगी क्यों कर रहे हो ? या तुम दोनों मस्ता गये हो, कुछ समझ में नहीं आता। मैं इस का कुछ भी अर्थ नहीं समझता कि तुम मुझे ज़बरदस्ती "वैद्य" क्यों बना रहे हो ? बार बार यही रट लगाये हो कि "तुम वैद्य हो, तुम वैद्य हो ।"

झुरउ–जान पड़ता है अभी आप ठिकाने पर नहीं आये हैं और अब भी आप हमें वही पुराना सबक सुनाते हो कि "हम वैद्य नहीं हैं, हमें वैद्यकी नहीं आती ?"

चौबे–यह बिलकुल सच है । मैं कहो तो गङ्गा उठाकर और जनेऊ की क़सम खाकर कह सकता हूं कि न मैं वैद्य हूं और न दवा देना जानता हूं ।

रमेसर–तो क्या यह बात झूठ है कि तुम राजवैद्य हो ?

चौबे–बिलकुल झूठ । (वे फिर मारते हैं) अरे रे ! हाय ! हाय ! हाय ! अरे बापरे ! मैं बे मौत मरा ! अरे भाई जो तुम कहो, मुझे मंजूर है ! जैसा कि तुम कहते हो मैं वैसा ही नामी ग्रामी वैद्य हूं–नाना प्रकार की रस मात्रा मेरे पास हैं। मैं अनेक जड़ी बूटियों को भली भांति जानता हूं.। इस मार से बचने के लिये तुम जो कुछ कहो, सब मंजूर है । "भीख छोड़ी कुत्तों से बचें" ।

झुरउ–बड़ी बात है; बड़ी मुश्किल से आप ठीक रास्ते पर आये ।

रमेसर–आप को सच बात कहते मुझे असीम आनन्द हो रहा है ।

झुरड–मैं ने जो असभ्यता का व्यवहार किया है उसे आप भूल जावें–मैं माफ़ी माँगता हूं।

रमेसर–सच मुच, आपका मान-मर्दन होने से हम बड़े ही दुःखी हैं।

चौबे–परन्तु भाई, तुम जान बूझकर भूलते तो नहीं हो? क्या मुझे सच मुच वैद्य समझ रक्खा है।

रमेसर–निस्सन्देह, हमारा तो बांवन तोला पाव रत्ती पूरा २ विश्वास है।

चौबे–भाई, मुझे तो इस बातकी खबर नहीं कि "मैं वैद्यराज हूं"!

झुरड–अरे कहते क्या हो? आप की सानी का वैद्य इस प्रांत में कोई और भी है?

चौबे–(लाचारी से नक़ली हँसी हँसता है) हः हः हः।

रमेसर–हम ने नहीं सुना कि आप ने जिस रोगी की नाड़ी देखी हो; और उसे आराम न हुआ हो?

चौबे–वाह रे हम! हमें मालूम ही न था कि हम में यह करामात है।

झुरड–उस औरत के तो हाथ पैर तक जुड़ा गये थे, और वह निर्जीव पड़ी रही। मरघट में ले जाने की तैयारी हो रही थी। इतने में आप के बुलाये जाने पर न मालूम आप ने कौन सी बूटी दे दी कि वह चट से उठ बैठी और मजे में इस प्रकार बात चीत करने लगी, मानों सोकर उठी हो।

चौबे–हः हः हः बलिहारी है!

रमेसर–और वह लड़का कितने ऊंचे से गिरा था, कुछ ठिकाना है! उस के तमाम हाड़ चकना चूर हो गये! पर ताहरी दवा, ज़रासा तेल मलते ही कूदता फाँदता चला गया!

चौबे–वाह! वाह!!

रमेसर–सुनिये महाराज, मैं थोड़े में आप को यह बतला देना चा-

हता हूं, कि जहां आप को चलना है, वहां से आप को खूब रुपया मिलेगा। आप मालामाल हो जावेंगे।

चौबे–क्या मैं सचमुच मालामाल हो जाऊंगा?

रमेसर–बेशक!

चौबे–तब तो मैं बड़ा ही चतुर वैद्य हूं। अभी तक तो मैं इस बात को भूल ही गया था! अच्छा हुआ जो जल्दी स्मरण हो आया। अच्छा कहो अब कहां चलना है?

झुरउ–हम आप को घोड़ा देंगे। बड़ी इज्ज़त से ले चलेंगे। हमारा गाँव यहां से बहुत दूर नहीं है, हमारे मालिक बड़े भले आदमी हैं। उन की एकलौती लड़की गुलाबदेई एकाएक गूँगी हो गई है–उस की वाचा-शक्ति जाती रही है। उसे चलकर देखिये और ऐसी दवा—

चौबे–मुझे ही अब कोई आकर औषधि देनेवाला चाहिये!

रमेसर–(स्वगत) वैद्यराज कुछ मसखरे से दिखते हैं? (प्रकट) चलिये महाराज।

चौबे–बिना अङ्गा पहिने नंगे सिर ही कैसे चला चलूं? ज़रा कपड़े तो घर चलकर पहिन लेनें दो।

झुरउ–आप चले तो चलिये, वहां आप को सभी चीजें मिल जावेंगी।

चौबे–फिर कोई चिन्ता नहीं है। देखो यह जो हमारी थैली है, इसी में सब कुछ है–इसे ज़रा होशियारी से रखना। हांजी, तुम्हारा नाम क्या है?

झुरउ–झुरउ।

चौबे–और तुम्हारा भैया?

रमेसर–रमेसर।

चौबे–वाह! अच्छे नाम हैं–खासी जोड़ी है! अच्छा झुरउ तुम हमारी यह चिलम सँभालकर रख लो। यह सब बातें मैं वैद्य की हैसियत से कह रहा हूं–इस बात पर ध्यान रखना। और रमेसर तुम यहां आओ;

बतलाओ तुम क्या ले चलोगे? अच्छा लो तुम ये पत्तियां लेते चलो वैद्यराज को तो घोड़ा अच्छा ही चाहिये।

रमेसर–महाराज, घोड़ा ऐसा लाऊंगा, जिसे देखकर ही आ प्रसन्न होंगे। हां, आप घोड़ेपर डरते तो नहीं हैं?

चौबे–(स्वगत–धीरे धीरे फिर क्रमशः प्रकट) खासे वैद्यराज!

गूंदा जावे जैसा आटा, तैसे वैद्य बना हूं।
करो दवाई कोई मेरी, बेबस हो मरता हूं।

(जोर से) मेरी एक मात्र स्त्री! वह मुझे कहां पर, पता लगा जावेगी?

रमेसर–(ज़ोर से हँसकर) चलिए अब चुप चाप नहीं तो, फिर लाठी छूटेंगी।

झुरउ–चलो वैद्यजी झट। नहीं तो पड़ते हैं फिर लठ।

दूसरा अङ्क।

प्रथम गर्भाङ्क।

स्थान—सूमड़चंद का मकान।

[सूमड़चन्द, झुरउ, रमेसर, धाँधू और मथुरिया प्रवेश करते हैं।]

रमेसर–मुझे पूरा पूरा भरोसा हो गया है कि एक घड़ी भर में ही गुलाबेदेई को आराम हो जावेगा; क्यों कि ये कोई मामूली वैद्य नहीं हैं!

झुरउ–अब इन गोरे–काले सभी डाक्टरों को चाहिये कि अपने २ दवाखाने बंद कर घर बैठें। और उन वैद्यों को चाहिये कि हमारे इन वैद्यराज की जूतियां साफ कर पेट भरें।

रमेसर–भइ, इन्हों ने जो जो करामातें की हैं, उन का हाल सुनकर चकित होना पड़ता है; एक विलक्षण महात्मा हैं।

झुरउ–अब इस से बढ़कर चमत्कार और क्या हो सकता है कि मुर्दे में जान डाल दी।

रमेसर–केवल यही एक दुर्गुण है कि स्वभाव कुछ लहरी है । अपना गुण छिपाने की बड़ी हविस रहती है। और ऊपरी ठाठ को देखकर कौन कह सकता है कि ये वैद्य हैं।

झुरउ–ज़रा मसखरे पन की भी बातें करते हैं. । यही नहीं, कभी २ तो ऐसा जान पड़ता है, मानो ये विक्षिप्त हैं !

रमेसर–परन्तु जनाब के अन्दर क्या २ गुण भरे हुये हैं। वैद्यक ज्ञान की भारी मशाल जल रही है। एक बार शुरु किया कि ठहरना तो जानते ही नहीं? श्लोकों की झड़ लगा देते हैं।

झुरउ–मैं ने तो पहले पहल यह समझा कि बगल में कहीं पुस्तक छिपा रक्खी है, उसी को देख देखकर पढ़ते जाते हैं।

रमेसर–सब दूर इन की प्रशंसा होती है, न जानें कहां कहां के लोग इन्हें बुलाने आया करते हैं।

सूमड़चन्द–तो फिर जाओ, बुला लाओ। यहीं ठहरा दो।

झुरउ–यही तो एक अड़चन है–यहीं न उन्हें टिकाना चाहिए था? कहने लगे लाला के घर हम नहीं ठहरते। इसी से शिवाले में ठहरा आये हैं। वहीं उन के पास सीधा सामान भेजना है। जैसे मिले वैसे ही लिवा लाये हैं–पगड़ी भी नहीं बाँधे हैं।

सूमड़चन्द–यहीं से एक पगड़ी लेते जाओ; पर देरी न करो। जल्दी लिवा लाओ। झुरउ क्या खड़े खड़े मुँह ताक रहे हो।

झुरउ–लीजिये मैं यहीं जाता हूं।

[दौड़ता हुआ जाता है]

रमेसर–मैं उन्हें सीधा सामान दिये आता हूं।

[जाता है]

मथुरिया–(आगे आकर) अब तक जैसा हाल होता आया है, सब वैसा ही आज भी होगा। भरोसा न हो तो मुझ से चाहे लिखा लेकर मैं इतनी बुड्ढी हुई हूं, मेरी बातें और विधाता के अंक बराबर हैं। तुम एक लाख वैद्य बुलाकर पांच लाख दवाइयाँ भले ही उसे घोंट कर पिला दो, पर तनिक भी आराम न होगा। उसे तो दूसरी ही दवा चाहिये उस के मन सुहाते दूल्हे के साथ उस की शादी कर दो।

धाँधू–मथुरिया, तुझे बीच में पड़ने की बुरी लत पड़ गई है! मैं कई बार रोका, पर तू चुप नहीं रहती! मुझे जब तक गुस्सा नहीं आ तभी तक खैर है, एक बार गुस्सा आया कि फिर देखना भला!

सूमड़चन्द–ससुरी, तू चुप चाप क्यों नहीं बैठती! तुझे ये बा किस ने सिखलाई हैं?

मथुरिया–तुम कुछ भी क्यों न करो, मैं अपनी टेक कभी न छोड़ूंगी। तुम इन डाक्टर, हकीमों की कितनी ही दवाइयां क्यों न दो पर उसे ज़रा भी फ़ायदा न होगा। उसे सिर्फ पानी पिलाने से जितना फ़ायदा होता, इन काढ़े और गोलियों से भी उतना ही! मेरी कह मानो। तुम उस का विवाह झटपट कर डालो। उसे जो रोग है-जो पीड़ है, वह विवाह की ही चिन्ता का फल है।

सूमड़चंद–तेरी अक्ल चरने गई है, तभी तू ऐसी बातें बकती है न। मैं उस का विवाह करने में कब देर करता हूं–पराये धन को रखना पसन्द किसे है? पर इस गूँगी के साथ विवाह करने को तो कोई तैयार हो? जब मैं लड़का देख भाल आया और विवाहकी तैयारी करने लगा; तब इसने साफ़ इन्कार कर दिया और कहा कि नहीं, अभी विवाह न होगा।

मथुरिया–इन्कार न करे तो और करे ही क्या? जिसे वह देखना तक नहीं चाहती, उसी के गले से जब जन्म भर के लिये उसे आप बाँधने लगे; तब वह शादी करने से ही इन्कार करने के सिवाय और क्या करे

ती थी ? वह जिसे चाहती है, तुम उसी के साथ क्यों नहीं विवाह
देते ? उस समय तो वह भली चङ्गी थी न ? मैं फिर भी कहती
कि उस मनोहरलाल के साथ तुम उस का विवाह कर दो; वह खुशी से
ूर कर लेगा—चाहे वह गूँगी हो चाहे बहिरी !

सूमडचंद—कहां का मनोहरलाल ? वह दरिद्री ? उसे मैं अपना
माई बनाऊं ? मैंने जैसा वर ढूँढा है, यदि वह उस की बराबरी का
नवान होता तो मैं राजी भी हो जाता ।

मथुरिया—अरे ! परन्तु उस के चाचा के तो कोई औलाद नहीं है;
स से उस की सारी जायदाद इसी को तो मिलेगी । फिर कौन मुँह से
ोई इसे दरिद्री कहेगा ?

सूमड़चंद—मैं ऐसा, हाथ का छोड़ भागते के पीछे दौड़ने वाला नहीं ?
्या खूब ! चाचा मरेगा तब उस की जागीर इसे मिलेगी ? लेकिन खैर,
ह मान भी लिया, यह बात तो है ही नहीं कि चट तेरी शादी और
ट चाचा की मौत ! वह तो अभी मजे में तीन पाव आटा हज़म करता
है और सेर भर दूध गटक जाता है । अभी दश वर्ष तक तो उसका बाल
भी बाँका नहीं हो सकता—मरना तो दूर की बात है । तब तक मेरी लड़की
क्या उपासी रहा करे या दूसरों के यहां पीसनें जाया करे ?

मथुरिया—मैं ने आज तक तुम्हारी ये बातें हज़ारों बार सुनी । समझ
में नहीं आता कि जब मियां बीबी राजी हैं, तो काजी क्यों जलता
भुनता है ? अपना भला बुरा किसे नहीं सूझता ? उस के यहां जायदाद
नहीं है, वह रोजगार नहीं करता—उस की आमदनी बहुत थोड़ी है ।
इन बातों को क्या वे नहीं समझते जिन पर बीतेगी ? पर मा बाप से इन
झगड़ों में पड़े बिना रहा कब जाता है ? पड़ोसिन राधा ने और उस के
घरवाले ने अपनी लड़की का गला उस काले फतहचन्द के हाथ में
इस लिये दबा दिया कि वह बड़ा नाम वाला आदमी है अब, उस नाम
को लेकर चाटें ? उस मुए ने सारी गृहस्थी बर्बाद कर डाली और पार

साल जब क़िस्त अदा न की तब सब खेत नीलाम हो गये। अब दारू पीकर औरत को बड़ी निर्दयता से पीटा करता है, सब लोग थू थू करते हैं, पर उसे कुछ भी पर्वा नहीं। वह बेचारी राधा अब आठ आठ आँसू रोती है और विवाह कराने वालों के गुण गाती है। लड़की चाहती थी कि प्यारेलाल के साथ विवाह हो जाय तो बड़ी बात है; पर मा बाप कब ऐसी बातें पसंद करते हैं। देखो वह प्यारेलाल मजे में रहता है, घर में दाल रोटी से सुखी है। इन से भी कुछ सयानपन सीख कर समझ जाओ तो भली बात है।

सूमड़चंद—बस बस अब दाँत किट किट बंद कर। हम से कहती है कि सयानपन सीखो? अब तू इन बातों की हम से कभी चर्चा न छेड़ना; नहीं तो तेरे हक़ में अब अच्छा न होगा! बूढ़ी पुरानी है, लड़कपन में हमें खिलाया है इस से क्या हुआ? क्या सदा ऐसा अपमान करती रहेगी?

धाँधू—(उठकर मथुरिया को मारने दौड़ता है, वह सूमड़चंद के पीछे छिपती है और वह क्रोध के मारे रोके नहीं रुकता, बार २ मारने को दौड़ता है और उस की चप्पतें सूमड़ पर ही गिरती हैं) ज़रा ठहर तो जा, फिर मैं बतलाता हूं, इन बातों का मज़ा। तुझ से ऐसी बातें करने के लिये कहा किस ने था; जो तू बीच में पड़ती है? अब फिर कभी इस प्रकार बीच में बोलेगी? हजार बार समझा कर कहा कि अब वे सयाने हुये; उन से सम्हल कर बात चीत किया कर। पर तेरे मन में एक नहीं आती, न जाने तूने क्या सोच रक्खा है? क्यों अब आगे तुझे खबर रहेगी कि नहीं? बोल जबाब क्यों नहीं देती? तू इस तरह न मानेगी अँ?

सूमड़चंद—अरे बस बाबा बस, यह क्या है?

धाँधू—(उसे मारने को हाथ उठाकर सूमड़चंद ही के कन्धे पर घूंसे लगाता है) वह इस तरह मानने वाली नहीं है। हूं! हूं! क्यों अब तेरी अच्छी तरह—क्यों एं, अब सुनेगी कि नहीं।

सूमड़चंद–अरे भाई बहुत हुआ, बस करो । मुझे क्यों बीचमें—
(इतने में झुरउ दौड़ता हुआ आता है और उस के पीछे उलटी सीधी पगड़ी लपेटे हुए चौबेजी प्रवेश करते हैं)

झुरउ–अरे ! यह क्या करते हो ? वैद्यराज आते हैं, चलो झट !

सूमड़चंद–आइए वैद्यराज, नमस्कार !

चौबे–अरे ! यह क्या ? आप तो लाला हैं न ?

सूमड़चंद–हां लाला हैं न, लाला हैं न ? हां, हां ।

चौबे–फिर आप हमें नमस्कार किस मुँह से करते हैं ? नमस्कार करते हो ? एं ! नमस्कार करते हो ?

सूमड़चंद–इस में क्या हर्ज़ हो गया ? कुछ नुक़सान है ?

चौबे–नुक़सान ! अब नुक़सान पूछते हो ? लो मैं यह चला । जहां अपनी मान हानि हो, वहां क्षण भर भी न ठहरना चाहिये । चरक में स्पष्ट कहा है "शुभं करोति कल्याणं" और क्या चाहिये ।

सूमड़चंद–महाराज, मैं चरक फरक कुछ नहीं जानता । आप से हाथ जोड़ कर माफ़ी माँगता हूं–लीजिये अब तो मान की मरम्मत हो गई ?

चौबे–अच्छा तो अब "पा लागी" कहो ?

सूमड़चंद–पालागी वैद्यराजजी !

चौबे–मैं वैद्य कि आप ?

सूमड़चंद–इस के माने क्या हुये ?

चौबे–माने सुन लीजिए । हमने लोगों से सुना है कि आप को औषधियों का ज्ञान, रोगों की परीक्षा, भस्म और रस मात्राओं की अच्छी जानकारी है ।

सूमड़चंद–आप किस से बात चीत कर रहे हैं ?

चौबे–अजी आप से ।

सूमड़चंद–मैं वैद्य नहीं हूं ।

चौबे–क्या ? आप वैद्य नहीं हैं ?

सूमड़चंद–इस के मानी ?

चौबे–मानी क्या ? क्या आप वैद्य नहीं हैं ?

सूमड़चंद–क्या आश्चर्य है ? अजी मैं वैद्य नहीं हूं ?

चौबे–क्या बिलकुल आप वैद्य नहीं हैं ?

सूमड़चंद–बिलकुल नहीं।

चौबे–सचमुच नहीं ?

सूमड़चंद–सचमुच नहीं।

चौबे–इमान से कहते हैं न ?

सूमड़चंद–अरे भइ, यह है क्या ? नहीं हूं, मैं वैद्य नहीं हूं।

चौबे–वाह ! तब होशियार हो जाइये अब मैं आप को वैद्य बनाता हूं [अपने हाथ की लाठी से उसे खूब पीटता है।]

सूमड़चंद–अरे बापरे ! मैं मरा !! यह क्या है ?

चौबे–हुँः हुँः अब आप वैद्य होगये। यह क्या मैं भी इसी तरह वैद्य बना हूं। और कुछ नहीं।

सूमड़चंद–(रमेसर से) क्योंरे यह भूत कहां से पकड़ लाया है ?

रमेसर–मैं आप से पहले ही कह चुका हूं कि ज़रा ये विक्षिप्त हैं।

सूमड़चंद–वह अपने घर के लिये ही पागल रहें। हमें ऐसी आफ़त न चाहिये। अब इसे अपना बोरिया बँधना लेकर रास्ता लेने दो। कोई काम नहीं ऐसे आदमी का यहां।

रमेसर–सरकार इतनी जल्दी खफ़ा न होइये। इन के गुनों पर ध्यान दीजिये। ये ज़रा दिल्लगीबाज़ हैं। उस की इन्हों ने वानगी बतलाई है।

सूमड़चंद–यह कैसी दिल्लगी है, जो प्रांण लेने पर उतारू है ? भाड़ में जाय ऐसी दिल्लगी !

चौबे–लाला साहब, मैं माफ़ी मांगता हूं, मुझ से उद्दण्डता हो गई, क्षमा कीजिये।

सूमड़चन्द–हाँ, हाँ, आप मुझे काँटों में क्यों घसीटते हैं? आप हमारे पूज्य हैं–कृपया मुझ से माफ़ी न मांगिए।

चौबे–मुझे बहुत खेद है–पश्चाता—

सूमड़चन्द–जाने दीजिए, अब उस की चर्चा ही छोड़िए।

चौबे–आप को मारा, यह—

सूमड़चन्द–कोई हानि नहीं है–मुझे कोई चोट नहीं लगी?

चौबे–हम जैसे के हाथ से ऐसा प्रसाद—

सूमड़चन्द–जाने दीजिये, अब गई गुजरी बातों से कोई फ़ायदा नहीं है, अब यह सुनिए कि मेरी इकलौती लड़की को एकाएक एक अद्भुत रोग हो गया है।

चौबे–यह बड़े आनंद की बात है कि आपकी कन्या बीमार हुई; जो आप को मेरी आवश्यकता पड़ी और तो क्या, यदि आप सकुटुम्ब बीमार हो कर मरणोन्मुख पड़ें; तब मैं आप को अपना कर्तब दिखलाऊं।

सूमड़चन्द–इस इच्छा की जितनी प्रशंसा की जावे थोड़ी है। मैं आपका कृतज्ञ हूँ।

चौबे–मैं बिलकुल सत्य कहता हूँ जो मैं बोलता हूं सो नाफ (नाभि) की जड़ के पास से।

सूमड़चन्द–आप बड़े सज्जन और परोपकारी हैं।

चौबे–आप की लड़की का नाम क्या है?

सूमड़चन्द–महाराज उसे गुलाबदेई कहते हैं।

चौबे–वाह! कैसा प्यारा नाम है। यदि औषधि दें तो ऐसे ही मधुर नामवाले प्राणीको! गुलाबदेई! वाहरी गुलाबदेई!

सूमड़चन्द–आप यहाँ ठहरें, मैं देख आऊँ वह क्या कर रही है? (लौट कर आता है) अभी उसे लेकर आते हैं।

चौबे–अरे? आप ने उसे अभी तक क्यों नहीं बुलवाया? मैं समस्त वैद्यकशास्त्र का पूर्ण ज्ञान लिए उसे चङ्गी करने के लिए तैयार हूँ। और–

सूमड़चन्द–बतलाइए, भला देखें तो सही वह ज्ञान कैसा है ?

चौबे–देखना क्या है ? यहां आओ देखो यहां है। (हृदय को दिखलाता है।)

सूमड़चन्द–बहुत ठीक ! वाह ! यह देखो, गुलाबदेई आ गई।

चौबे–इसे ही दवा देना है ?

सूमड़चन्द–हाँ, महाराज, इसे ही औषधि देनी है। इसे मैं प्राण से भी अधिक चाहता हूँ–यदि इसे ज़रा भी कुछ बुरा भला हुआ तो मेरे प्राण न बचेंगे।

चौबे–ऐसा कभी न होने पावेगा। वैद्य की औषधि का सेवन किए बिना इसे मरना ही न चाहिए। जो कुछ होना होगा वह हम सरीखे वैद्यों की औषधियों से ही होगा। गुलाबदेई बैठो।

सूमड़चन्द–बैठ गुलाबी, खड़ी क्यों है ? बीमार आदमी को देर तक खड़ा न रहना चाहिए।

चौबे–(गुलाबदेई के पास जाकर नाड़ी देखने के लिये हाथ पकड़ता है) वाह ! रोगीपने के लक्षण तो बहुत ही अच्छे हैं। गाल फूले हुए हैं, आखें चमक रही हैं ? यदि ऐसा रोग सभी को हो जाय, तो बहुत अच्छा हो। (यह सुनकर गुलाबदेई हँसती है)

सूमड़चन्द–महाराज ! आप का यश दिन दूना बढ़े आप के नाड़ी देखते ही भला इसे हँसी तो आई।

चौबे–यह शुभ लक्षण हुआ, इसे वैद्य लोग बहुत अच्छा शकुन मानते हैं। इस से बढ़कर सुलक्षन और क्या हो सकता है कि नाड़ी देखते ही रोगी को हँसी आई–वह प्रसन्न हुआ ? मानो उसका आधा रोग हाथ लगाते ही जाता रहा, (गलाबदेई से) हाँ गुलाबदेई ! कहो तो तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हारे रोग के लक्षण भी तो सुनें ?

गुलाबदेई–(इशारों से उत्तर देती है; पहले गले की ओर हाथ कर फिर ठुड्डी की ओर सङ्केत कर) हँ, हाँ, हाँ, अँ, आँ, हाँ !

चौबे–कहती क्या हो ?

गुलाबदेई–हूँ, हाँ, आँ, हीं, हाँ, हाँ।

चौबे–क्या कहा ?

गुलाबदेई–हाँ, हीं, हों, हां, अँ,।

चौबे–(उस की नकल करके मुँह चिढ़ाते हुए हाँ, हीं, हों, हाँ, हुं, हं, हों। यह है क्या ? तुम ने साफ़ बात न बतलाने की मानो क़सम खा रखी है ? भई यह किस देश की भाषा है ? कोई दुभाषिया है ?

सूमड़चन्द–महाराज इसे यही तो बीमारी है । न मालूम क्या हो गया, सो एक दिन इस की एकाएक वाक्-शक्ति लुप्त हो गई ! इस की शादी में बड़ा झगड़ा पड़ गया है; इसी से यह सब हुआ है ।

चौबे–क्यों शादी में ऐसा कौनसा झगड़ा है ।

सूमड़चन्द–जिसके यहां फलदान (वाग्दान) हो चुका है वह कहता है कि जब तक यह अच्छी तरह बात चीत न करने लगेगी तब तक हम इस के साथ शादी न होने देगें ?

चौबे–वह गँवार बड़ा मूर्ख है। यह पहला मूर्ख हमें मिला जो यह नहीं चाहता कि हमारी स्त्री का मुँह बंद रहे–वह बात न कर सके ? यदि मेरी स्त्री इसी प्रकार वाक्-शक्ति विहीना हो जावे तो मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली समझूं। और फिर मैं उस की दवा दारू में एक पाई भी खर्च न करूंगा न ज़रासी सेवा खुशामद करूंगा ।

सूमड़चन्द–वैद्यराज, आप के यहां जब कोई बीमार हो; तो आप अवश्य ऐसा करें; परन्तु मेरी लड़की को तो ऐसी हुक्मी दवाई दीजिए; जिस से वह तुरंत बातचीत कर सके। बारंबार मेरी आप से यही प्रार्थना है–मैं आप के इस उपकार को कभी न भूलूंगा ?

चौबे–अब आप बिलकुल चिन्ता न करें। केवल आप हमें यही बतला दें कि जब से इस का बोल बंद हुआ है। तब से इसे विशेष पीड़ा तो नहीं है।

सूमड़चन्द–ना, इस के पूंछने की क्या ज़रूरत ?

चौबे–यह भी अच्छा है–हाँ, मुँह में कहीं दर्द तो नहीं होता ?

सूमड़चन्द–ख़ूब !

चौबे–ठीक है। (रोगी से) देखूं तुम्हारी नाड़ी। ओफ़! नाड़ी से तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि तुम्हारी लड़की का बोल बंद हो गया होगा !

सूमडचन्द–सत्य है, इस का बोल बंद हो गया है। इसी से यह इतने दिनों से बीमार है। आप ने रोग को बहुत जल्दी परख लिया।

चौबे–यह कौन बड़ी बात है ? नाड़ी देखकर रोग जाँच लेना कोई कठिन काम नहीं है।

मथुरिया–देखो कैसे जल्दी परखा !

चौबे–ज़रा से रोग को पहिचानने में हमें बिलम्ब ही कितना लगता है ? हाँ यदि कोई मूर्ख वैद्य होता, तो उसे अब तक सूझता ही नहीं। वह यहां वहां की बातें कर नाहक समय बर्बाद करता–पर यहां ये बातें नहीं हैं ? नाड़ी को स्पर्श करते ही रोग की परीक्षा कर लेते हैं ! क्यों मैंने कैसा झट से कह दिया कि इसका बोल बंद हो गया है। अब तुम्हीं खुद देख ही रहे हो, सच है न ?

सूमड़चन्द–हां रोग को तो आप ने ख़ूब परखा, पर यह तो बतलाइए कि यह हुआ कैसे–इसका मूल कारण क्या है ?

चौबे–इस का बतलाना कौन कठिन काम है ? जिस शक्ति की सहायता से मनुष्य बातचीत कर सक्ता है उस के विगलित हो जाते ही बोलना बंद हो गया।

सूमड़चन्द–ठीक, परन्तु उस शक्ति के विगलित हो जाने का कारण ?

चौबे–वैद्यक का चाहे सो श्रेष्ठ ग्रन्थ आप देखें, मैं जो कहता हूँ वह आप को उस में मिलेगा। जिह्वा के हलने चलने में बाधा पड़ी कि बोलने में बिगाड़ होने ही वाला।

सूमड़चन्द—परन्तु मैं आप से यही जानना चाहता हूँ कि इस की जिह्वाके हलने चलने में बाधा पड़ने का कारण क्या ?

चौबे—वागभट ने अपने ग्रन्थ चरक में इस का..........वाह ! बहुत ही अच्छा विवेचन किया है ।

सूमड़चन्द—अवश्य किया होगा ?

चौबे—अहाहा ! वे ग्रन्थ कैसे उत्तम हैं ?

सूमड़चन्द—लाख कहो तो भी हैं तो संसकीरत के ग्रन्थ !

चौबे—वागभट्ट की बराबरी तो कोई कर ही नहीं सकता ! वे बहुत बड़े ! हम कितने ही बड़े क्यों न हो जावें (अपने हाथ ऊपर उठाकर पंजों के बल खड़ा होता है) तौ भी उन की बराबरी करने योग्य नहीं हो सकते, अच्छा ये बातें फिर कभी होंगी । हां, यहां देखिए, अपने इस शरीर में कफ वात पित्तादि अनेक वायु हैं । इन में से यदि किसी एक की भी प्रबलता हो जावे; तो उस से उस उस वायुओं से उत्पन्न होने का रोग हो जाते हैं । पित्ताम् (पित्त) वायु से उत्पन्न होनेवाला गुल्म जब हृदय की अंतर्नाड़िका से मिलता है तब अनेक रोग व्याधियों के उद्गमस्थान को उच्चलिता प्राप्त होती हैं । क्योंकि......क्योंकि......आप संस्कृत तो थोड़ी बहुत जानते ही होंगे ?

सूमड़चन्द—बिलकुल नहीं—हम महाजन लोगों को संसकीरत का ज्ञान कहां से हो सकेगा ?

चौबे—फिर आप को प्रमाण सुनाने से कोई लाभ न होगा अस्तु दो एक प्रमाण तो सुनही लीजिए। वाग्भट्ट ने कहा है कि **"यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः । सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय् च ॥"** देखिए, ठीक है न ? तुम पूछोगे कि अमृत सरीखी अक्षय अर्थात् क्षय को नष्ट करने वाली, ऐसी कौन औषधि है ? तो इस के लिए यह वचन है **"मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्ती" परिभाव्य च ।** वैय्याकरण—पर हां, आप तो संस्कृत जानते ही नहीं, वृथा बकने से क्या लाभ ?

सूमड़चन्द–अहा ! अपार विद्वत्ता है ।

मथुरिया–अरे दैयारे ! बड़े बिकट वैद्य हैं ।

धाँधू–बड़े अद्‌भुत, विलक्षण हैं । मैं तो एक अक्षर भी नहीं समझा।

चौबे–हाँ, तो हम पहले जिन वायुओं का वर्णन कर चुके हैं, वे जब बाई ओर छाती में, कन्धे के पास जहां अन्नाशय है, वहां से नीचे नाभी के समीप जहां फेंफड़ा है, वहां जाती हैं और फिर वहां से दाहिनी ओर कलेजे से भिड़कर–उसे हम हृत्कोश कहते हैं–वहां से मुँह की ओर जाने वाली सब नसें आकुंचित होती हैं और उन से निकलने वाली वायु का पहली वायु से युद्ध होने पर जिह्वा बंद हो जाती है । तुम ध्यान देकर सुनते चलो, सब बातें धीरे धीरे समझ में आती जावेंगी । देखो, उन में ऐसा है कि —

सूमड़चद–मैं ध्यान से सब सुन रहा हूँ ।

चौबे–उन वायुओं का परिहार............आप अच्छी तरह से मेरी बातों को सुन रहे हैं न ?

सूमड़चन्द–कह तो चुका कि ध्यान से सब सुन रहा हूँ ।

चौबे–उन वायुओं का परिहार हो कर कफ़ बात पित्तादि में दोष-जनित आम्लवायुओं का निराकरण करनेवाली औषधि दी जावे, तो "**पृथ्वि त्वया धृता लोका......**आप की लड़की के कण्ठ रुंधने का यही कारण है ।

मथुरिया–यह कारण तो बड़ा लम्बा चौड़ा बतलाया ।

धाँधू–जो कहीं मुझे इतनी वैद्यकी आती होती, तो कहना ही क्या था !

सूमड़चंद–आप का बतलाया हुआ कारण बहुत ठीक है, मैं उसे समझ भी गया । केवल एक शंका है ! परसों यहां एक वैद्य आये थे; वे कहते थे कि दाहिनी ओर छाती में हृत्कोश और दोनों ओर फेंफ़ड़े होते हैं ! आप कुछ और ही बतला रहे हैं !

चौबे–ये होशयारी का दम भरने वाले कोई डाक्टर होंगे ! इन लोगों को रत्ति भर भी अक्ल नहीं है । अंग्रेज़ों का वैधक सीखकर ये लोग हम से टक्कर कैसे ले सक्ते हैं । जैसा तुम ने बतलाया, वैसा अंग्रेज़ों के वैधक में है । अंग्रेजों के कलेजे और फेफड़े जैसे, तुमने बतलाये वैसे ही हैं । परन्तु ऐसे ही हमारे कैसे हो सक्ते हैं–यहां की हवा निराली–यह देश ही निराला है ।

सूमड़चन्द–पर इस बातका बतलानेवाला वैद्य ही था, डाक्टर नहीं । उस ने किसी बहुत ही पुराने संसकीरत की किताब का श्लोक भी सुनाया था ।

चौबे–पुराने ग्रन्थ का ? तभी ऐसा कहा ? पुराने ज़माने के आदमियों का यही हाल था । पर हम ने सभी स्थान बदल दिये हैं । भई अब यह दूसरा ही युग है ! ये...पुराने मूर्ख वैद्य और बेअक्ल डाक्टर कुछ भी नहीं जानते । तुम भी इन की बातोंपर विश्वास कर—

सूमड़चन्द–मै क्या जानूं इन की—

चौबे–ठीक है, सर्वथा सत्य है, तुम्हारे ऊपर क्रोध करने में कोई लाभ नहीं है । जितना ज्ञान हमें है, उतना तुम्हें कैसे हो सकता है ?

सूमड़चंद–इस बात को तो आप जानते ही हैं; पर अब आगे कोई प्रबन्ध कीजिए । कौनसी दवा फ़ायदा पहुँचा सकेगी ?

चौबे–तो अब दवा का प्रबन्ध करें ?

सूमड़चन्द–हाँ, महाराज ।

चौबे–तब आप मेरा कहना मानें । अच्छे दूध भात में इस चूरन को छोड़ दो । और भोजन करा दो, पर इसमें उम्दा बनारसी शक्कर भी मिला देना । इसके खानेके बाद रोगी को आराम करने दो ।

सूमड़चन्द–महाराज, इस से होगा ही क्या ? यह तो भङ्ग सी दिखती है ?

चौबे–वह कुछ भी हो; तुम क्या जानो इस बात को कि भङ्ग में कौन कौन से गुण हैं ? झट से कह दिया कि यह तो भङ्ग है ? हम कहते हैं कि इस से शर्तिया आराम होगा। यदि इस से जल्दी आराम न हो; तो उबले हुए अकरकरहे का थोड़ासा रस मिला देना।

सूमड़चन्द–बहुत ठीक है। इन का नाम है वैद्य जो ज़रा ज़रासी जड़ी बूटियों के पूरे पूरे गुण जानते हैं। अरे कोई है, भीतर जाकर कहो कि थोड़ासा ताजा भात तैयार करो। गुलाबदेई तुम भीतर चलो, मैं आता हूँ।

चौबे–अच्छा अब मुझे भी आज्ञा दीजिए। शामतक देखिएगा कि दवाई ने कैसा अद्भुत असर किया! (मथुरिया से) हाँ, क्या तुम भी इसी घर में रहती हो ? तुम्हारी तबियत भी अच्छी नहीं दिखती ?

मथुरिया–किस की, मेरी ? यह क्या कहते हो ? मैं तो खूब हट्टी कट्टी हूँ, मुझे तो कुछ भी नहीं है!

चौबे–नहीं तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं है, तुम क्या जानों–लो मैं यह औषधि देता हूँ।

मथुरिया–सच ? मैं दवा न लूँगी।

चौबे–एँ! तुम हमारी औषधियों का अनादर करती हो ?

सूमड़चन्द–महाराज, जब वह नहीं लेती, तब आप क्यों उस के गले जबर्दस्ती दवा मढ़ते हैं ?

चौबे–वाह! तुम ने भी खूब सुनाई। कहीं रोगी को यह भी मालूम होता है कि हमें कोई रोग हो गया है–यदि ऐसा होता; तो हम वैद्य बनाये ही किस लिये गये ? हाँ, यदि इस के भाग्य में हमारी औषधि न बदी होगी; तो इस का कोई इलाज ही नहीं हो सकता। अच्छा हो यदि यह औषधि ले ले।

मथुरिया–मैं तो न लूँगी।

चौबे–चूल्हे में जाओ, न लो। जब तुम्हारी तक़दीर ही फूट गई होगी; तो मैं क्या करूंगा? लो मैं जाता हूँ।

सूमड़चन्द–महाराज वैद्यराज, ठहरिए जरा—

चौबे–क्यों अब क्या है?

सूमड़चन्द–आप अपनी नजर—

चौबे–(हाथ हिलाकर) हाँ, हाँ, आप यह क्या करते हैं हमारा यह नियम नहीं है! ऐसा नहीं हो सकता।

सूमड़चन्द–परन्तु यह थोड़ीसी—

चौबे–नहीं, कभी नहीं।

सूमड़चन्द–हम दे ही क्या सकते हैं, केवल आप के प्रसन्न—

चौबे–इस की चर्चा भी न कीजिए।

सूमड़चन्द–इतनी ही मेरी.................—

चौबे–यह त्रिकाल में भी न होगा।

सूमड़चन्द–तथापि मेरे ऊपर कृपाकर—

चौबे–तुमने अच्छी पोंय लगा रखी है!

सूमड़चन्द–आप को हमारी प्रार्थना स्वीकार करनी पड़ेगी।

चौबे–हम द्रव्य के लालच से वैदकी नहीं करते हैं।

सूमड़चन्द–इस बात को तो मैं जानता हूँ; परन्तु—

चौबे–(रुपये लेकर) अच्छा हैं कितने?

सूमड़चन्द–थोड़े से दश पन्द्रह—

चौबे–हम कुछ रुपये पैसे के भूखे नहीं हैं!

सूमड़चन्द–मैं खूबी जानता हूँ।

चौबे–हम इस बात पर ध्यान देकर दवा नहीं करते कि इनके यहां दवाई देने से बहुत कुछ मिलेगा और उनके यहां कम।

सूमड़चन्द–परन्तु मैं यह समझ कर आप को यह थोड़े ही—

चौबे–अच्छा, अब हम जाते हैं। यदि कुछ रोग के घटने बढ़ने के लक्षण दिखें, तो हमें बुलाना, भला।

सूमड़चन्द–बहुत अच्छा।

[दोनों, दोनों ओर प्रस्थान करते हैं।]

दूसरा गर्भाङ्क।

स्थान–धर्मशाला।

चौबेजी अकेले बैठे हुए गाँजा पी रहे हैं,
और नशे की झोक में उलटा सीधा पद गाते हैं।

(हँसते हुए.)

मौज रहे अब कितनी भाई, मौज रहे अब कितनी, हाँ!
लाऊँ गाँजा और तमांखू, ताजी ताजी भङ्ग।
हुक्के भर जब लगें सड़ाके जमता खासा रंग! अरे हाँ! हाँ!
तुझे खबर क्या होगी ससुरी, मैं हूँ अब *कविराज,
बड़े बड़े धनवानों की भी, रखता हूँगा लाज—
प्राण सब के हैं कब्जे में हाँ! हाँ!!
रुपये रखूँ बगल में अपने, डाँट्टू उसको जी,
कानी कौड़ी भी ना उस को, दूँगा लातें जी, ए, हाँ! हाँ!!

(जिस सयम चौबेजी अन्तिम पद गा रहे थे, उसी समय मनोहरलाल ने प्रवेश किया और वैद्यराज ने नशे के झोके में आकर अपनी स्त्री समझ कर इसे ही लात मार दी।)

मनोहरलाल–अरे वैद्यराज, यह क्या करते हो? अभी से लातें फटकारने लगे?

---

* वैद्यराज.

चौबे–फिर क्यों रुपये माँगती है? कुछ तू ने तो पैदा किये नहीं हैं! मैं ने तो अपने पौरुष से–वैद्यक के भरोसे रुपये कमाये हैं! धत्तेरे की! (और एक थप्पड़ जमाता है)

मनोहरलाल–वैद्यराज, होश में आओ; यह क्या कर रहे हो? आँखें तो खोलो।

चौबे–(सावधान होकर) कौन है? तुम कौन हो? हाथ दिखलाओ; तुम्हें क्या है? कुछ लाये हो दश पाँच रुपये? (उस का हाथ पकड़ कर नाड़ी देखता है और मुँह बनाकर) ओफ़! तुम्हारी बड़ी बिकट अवस्था है!

मनोहर–महाराज, मुझे कोई बीमारी नहीं है। मैं आप को हाथ दिखलाने अथवा आप से औषधि माँगने नहीं आया हूँ।

चौबे–जब न तुम्हें हाथ दिखलाना है और न दवा लेनी है, तब फिर किस लिए आए हो? और रास्ते से ही क्यों न चिल्लाते आये कि "हमें कोई बीमारी नहीं है, हमें दवाई नहीं चाहिए।"

मनोहर–मैं जिस उद्देश से आप के समीप आया हूँ, उस का सार आप को सुनाए देता हूँ। मेरा नाम "मनोहरलाल" है।

चौबे–यह क्या तुम्हारे आने का कारण है?

मनोहर–पहले चित्त लगाकर सुन तो लीजिए। उस सूमड़चन्द की जो वह लड़की है–जिस का नाम गुलाबदेई है, उसे मैं हृदय से चाहता हूँ और वह भी मेरे ऊपर प्रेम करती है। मेरी यह प्रबल इच्छा है कि हम दोनों का विवाह हो जावे।

चौबे–अच्छी बात है; पर हमें क्यों सुनाते हो?

मनोहर–फिर वही! अजी, पर मुझे अपनी पूरी बात तो कहलेने दीजिए; आप तो बीच में ही शङ्का करते हैं। पहले मेरी बात सुन लीजिए, फिर—

चौबे–अच्छा, हाँ कहो।

मनोहर–उस का बाप बड़ा निर्दई है। वह अब हमारी उस की भेट तो दूर रही–उसने ऐसा प्रबन्ध कर दिया है कि परस्पर एक दूसरे को दर्शन भी दुर्लभ हो गए ! इसी से सोचा है कि कदाचित् आप की कृपा से कुछ हो सके तो हो सके। मैं बड़ी हिम्मत से आप के पास आया हूँ। यदि आप सहायता करेंगे, तो ही मेरा मनोरथ सफल हो सकेगा। आप की सहायता पर ही मेरे प्राण अवलम्बित हैं। सारा सुख, सारा—

चौबे–(कुछ क्रोधसा दिखलाकर) अरे ! ऐसी बात तुम्हें मुझ से कहना चाहिए ? तुम ने मुझे समझ क्या रखा है ? क्या मैं औरत मर्दों का मिलाप कराने के लिए यहाँ आया हूँ; या मेरी यह जीविका है ? क्यों जी तुम नहीं जानते कि मैं वैद्य हूँ। तुम ने समझा क्या है ? एँ ?

मनोहर–माफ़ कीजिए पर इतने जोर से चिल्ला कर बातें न कीजिए।

चौबे–और कहते हो कि चिल्लाओ नहीं ? ये बातें ! गाँव भर में तुम्हारी फ़जीहत करनी चाहिए, तुम अब इसी लायक हो।

मनोहर–नहीं महाराज, इतनी नाराजी न कीजिए !

चौबे–मूर्ख ! पाखण्डी कहीं के ! लाज नहीं लगती।

मनोहर–मैं हाथ जोड़कर भिक्षा माँगता हूँ, इतनी कृपा कीजिए।

चौबे–ठहरो, तुम्हारे कान उखाड़ के रहूंगा। यह वैद्य, ऐसे वैसे कामों में हाथ डालनेवाला नहीं है। जान पड़ता है तुम अभी अच्छी तरह समझ नहीं सके हो ? अब तुम्हें अच्छी तरह समझाना पड़ेगा, तभी तुम मानोंगे। तुम्हें जिस से यह मालूम हो जावे कि भले आदमियों से ऐसी बातें करने का फल कैसा मिलता है। आगे के लिए तुम्हें छड़का देना चाहिए।

मनोहर–(रुपयों से भरी हुई थैली खनखनां कर) देखो, वैद्यराज ? यह देखो।

चौबे–(रुपयों की खनखनाहट सुनते ही खुश होकर) सच पूछो तो जब दोनों का परस्पर एक दूसरे पर अखण्ड प्रेम है; तब बाप को बीच में

पड़ कर बाधा देना ही न चाहिए, (मनोहर फिर रुपये खनखनाता है) और सच्चे प्रेमियों का विवाह कराने में अवश्य ही सहायक होना चाहिए। तुम यही न कहते हो कि मैं तुम्हें सहायता दूँ ? कोई कठिनाई नहीं है, कर दूँगा। अच्छे काम के सभी सहायक होते हैं।

मनोहर–यह थोड़ीसी भेट अङ्गीकार कीजिए।

चौबे–(थैली लेकर) अँह, यह रीति अच्छी नहीं है ! पर तुम्हारी भेट लौटाना अच्छा भी नहीं दिखता, इस से रखे लेता हूँ। और मैंने पहले जो बातें कही हैं, उन पर ध्यान न देना, भला ! भाई, पहिले परीक्षा कर लेनी पड़ती है कि कहीं नकली प्रेम तो नहीं है ! सभी लोग तुम्हारे ऐसे सत्यवादी थोड़े होते हैं ? जब मेरा विश्वास हो गया; तब मैंने सहायक होना झट से स्वीकार कर लिया न ? कोई बहाना तो नहीं किया ? झूठों को देखते ही मेरे क्रोध का ठिकाना नहीं रहता।

मनोहर–आप को क्रोध उत्पन्न होने योग्य जो बातें मैंने की है, उन के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ–आप मुझे क्षमा अवश्य देंगे।

चौबे–अब उन गई गुजरी बातों की चर्चा छोड़ दीजिए। उन्हीं बातों का विचार करो, जिनसे आगे का काम ठीक हो।

मनोहर–गुलाबदेई बीमार है, उस का बोल बन्द हो गया है, यह बिलकुल झूठ है। पहले मुझे आप से यह कह लेने दीजिए कि यह सब ढोंग रचा गया है। अब तक अनेक वैद्य आचुके और उन्हों ने नाना प्रकार की बातें बनाकर अपनी आबरू बचाई, किसी ने कहा मस्तक में बिगाड़ होने से यह गूँगी हो गई है और किसी ने कहा कि यह सब अँतड़ियों का दोष है ! किसी ने गुल्म का विकार और आम्ल–वायु एवं पित्त–वायु बतलाकर अपनी फीस वसूल की, पर असली विकार अभी तक किसी की समझ में नहीं आया–आज मैं आप को सारा भेद बतलाये देता हूँ। यह 'प्रणय-विकार' है। बाप एक और आदमी के साथ उस का विवाह किया चाहता है, पर उसे यह बात मंजूर नहीं और इसी से विवाह को टालनेके

लिए उस ने यह युक्ति निकाली है। हाँ; तो अब बहुत सी गुप्त बातें करनी हैं, और यह स्थान इस योग्य नहीं कि यहाँ पर वे बातें की जावें। कहीं बाहर चलो, किसी जंगल में बैठकर बातचीत होगी, जिस में इस बात का डर न रहे कि कहीं कोई सुन न ले! यदि किसी ने यहांपर हमें और आप को इकट्ठा देख लिया; तो लोग नाहक सन्देह करेंगे; जिस से आगे कार्यसिद्धि में बाधा खड़ी हो जावेगी। चलिए कहीं चलें—चलते चलते रास्ते में बातें होती चलेंगी कि आगे अब क्या किया जावे—

चौबे—चलो, मैं तैयार हूँ। तुम्हारा यह एकनिष्ठ प्रेम देखकर हमें अपार आनन्द हो रहा है। वाहरे प्रेम! यदि हम ऐसे कार्य में सहायता न देंगे; तो देंगे ही किस में? हम अपना सारा 'बनस्पति–ज्ञान' लेकर आप की सहायता करने के लिए उद्यत हैं। हमारी करामात तभी है जब कि तुम्हें वह स्त्री प्राप्त करा सकें। (जाता है)

तीसरा अङ्क।

प्रथम गर्भाङ्क।

[**स्थान** जङ्गल—मनोहरलाल और चौबेजी प्रवेश करते हैं]

मनोहर—कहिए कैसा स्वाँग बनाया है, अब मुझे कौन पहचान सकेगा? और सूमड़चन्द ने तो मुझे ज्यादह देखा भी नहीं है। स्वाँग ही ऐसा बनाया है कि जिसका नाम, इस से अब पहचान जाने का बिलकुल ही डर नहीं रहा। आप तो हैं वैद्यराज और मैं आप का चेला।

चौबे—अरे क्या तुम्हीं मनोहरलाल हो? ओफ़! मैं तो बिलकुल पहचान ही नहीं सकता। पर भाई मुझे तो तुम्हारे मनोहरलाल होने में सन्देह होता है। तुम मनोहरलाल नहीं हो!

मनोहरलाल—महाराज अभी से ऐसी दिल्लगी न करो!

चौबे–भाई मैं दिल्लगी नहीं करता पर सचमुच यह कहता हूँ कि तुम ने स्वाँग तो बेढब बनाया है !

मनोहरलाल–जैसा स्वाँग बनते बन गया है अब वैसा ही काम भी फतह होना चाहिए । अगर मुझे दो चार संस्कृत श्लोक आते होते तो कितनी मजा होती पर क्या किया जाय, यही एक बड़ी कमी है !

चौबे–तुम इस की कुछ भी चिन्ता न करो। वैद्य बनने में कुछ भी नहीं लगता–न तो संस्कृत की ज़रूरत है, न वनस्पतियों की आवश्यकता है; और न रसमात्रा अथवा किसी दवा की ज़रूरत है। यहां किस साले को क्या आता जाता है !

मनोहर–वैद्यराज, आप कहते क्या हैं मैं कुछ समझ न सका !

चौबे–मैंने जो कहा वह बिलकुल ठीक है।

मनोहर–मैं फिर भी नहीं समझा !

चौबे–भाई, वैद्य बनजाना बिलकुल आसान काम है। अब मैं इस का खुलासा अर्थ करता हूँ, जिस से तुम्हारी समझ में अच्छी तरह से आ जावे !

मनोहर–सुनाइये ज़रा सुनूं तो। आप ने तो मुझे खूब उलझन में फाँसा–मैं तो भौंचक्कासा हो गया हूँ !

चौबे–देखो, कल सबेरे तक मुझे इस बात की ज़रा भी खबर न थी कि मैं धन्वन्तरी महाराज की सानी का बड़ा वैद्य हूँ !

मनोहर–क्या कहा ? आप खुद न जानते थे कि हम वैद्य हैं !

चौबे–हाँ, मैं बिलकुल न जानता था। कल मैं जंगल में पत्ते तोड़कर पत्तलें बना रहा था इतने में दो आदमियों ने आकर मुझसे कहा कि वैद्यराज कृपाकर हमारे साथ चले चलिये। मैं ने उन्हें बहुत समझाया "कि भाई, मैं वैद्य नहीं हूं;" पर उन्हों ने मेरी एक न सुनी। जब मैं उनकी बातपर राज़ी न हुआ तब वे लाठियों से मेरी पूजा करने लगे और कहने लगे वैद्य हो कि नहीं ? मंजूर करते हो या नहीं ? अपने प्राण

किसे अप्रिय हैं ? मैं ने लाचार होकर उन की बात मान ली। जब उन का पक्का निश्चय देखा; तब मैंने भी चटसे वैद्य बनने में कोई आपत्ति न की। मेरे वैद्य बनने का संक्षिप्त इतिहास इतना ही है।

अब नया हाल सुनिये, ज्यों ही उन्हों ने मुझे वैद्य के नाम से प्रसिद्ध किया, त्यों ही सभी लोग मुझे वैद्यराज समझ आदर देने लगे। अब जिसे देखो वही कहता है महाराज, मेरे पेट में दर्द है, मुझे ज्वर आता है, मुझे आँव गिरती है, या मुझे कब्जियत रहती है; ऐसी दवाई दीजिए जिस से फौरन आराम हो। किसी ने बहुत ठीक कहा है कि "दुनिया झुकती है, झुकाने वाला चाहिए"। हम भी कहते हैं कि "घी को खाना शक्कर से और दुनियाँ ठगना मक्कर से"।

अब जो लोग मेरे पास हाथ दिखाने आते हैं; उन के द्रव्य को अपहरण कर मैं किसी भी घास पात, जड़ीबूटी का रस, शहद, दूध या शर्वत के साथ पीने की आज्ञा दे देता हूँ। और कुछ दवाइयाँ बतलाकर कह देता हूँ, कि इन को कूट छानकर ५० या ७० दिन सबेरे सेवन करो। ईश्वर कि दया से आराम हो जावेगा नहीं तो हरि इच्छा। मनोहरलाल, होशियार आदमियों को चाहिए कि वे किसी और रोजगार में फँसने का कष्ट न उठावें। जिसे किसी रोजगार में नफ़ा न होता हो, उसे इस धन्धे में लाभ होगा। वैद्य को न तो बुद्धि ही की ज़रूरत है और न किसी बात का जबाबदार होना पड़ता है ! कोई इस बात के पूछने की भी हिम्मत न करेगा कि "ऐसा क्यों होगया," अथवा यह कौनसी औषधि है ? चाहे जिस चीज को पुड़िया में रखकर दवाई बना दो, कोई अच्छा नाम बतलाकर कहदो कि यह बड़ी अमूल्य भस्म है, इसे सौ भावनाएँ दी गई हैं। बस इतना करने से ही काम फतह हो जाता है। ईंट या कण्डे की भस्म उठाकर किसी पुड़िया में बन्द कर किसी को दे दो। और कहो, यह वसन्तमालिती है या मौक्तिक भस्म है। यदि दैववशात् रोगी मर जावे तो कह दो हम प्राणदान थोड़ा दे सक्ते हैं या अमृत कहाँ

से लावें पिलाने के लिए ? उस की आयु ही इतनी होगी या उस ने बद-परहेज़ी की होगी। यदि दैववशात् चङ्गा हो गया, तो चट से कह दिया कि कहो कैसी हुक्मी दवा है, खाते ही आराम हो गया। परन्तु यह आम-दनी अधिकाँश बेचारे मृतप्राय लोगों पर ही निर्भर है ! क्यों कि दवाई के गुणदोष बतलाने की उन में शक्ति ही नहीं रहती। कहो कैसा अच्छा रोज़गार है ?

मनोहर–वाह ! बहुत उत्तम धन्धा है।

चौबे–अरे, ये देखो कौन आ रहे हैं ! अच्छा अब या तो तुम यहीं पीछे झाड़ी में छिप रहो या आगे निकल जाओ, मैं पीछे पीछे आता हूँ ?

[एक ओर से मनोहर प्रस्थान करता है और दूसरी ओर से बक्खा और छब्बा प्रवेश करते हैं।]

बक्खा–बैदराज, पाँय लगि अँ इँ।

चौबे–आशीर्वाद।

बक्खा–महाराज, तनिक तुम्हारेइ तीर लउँ आये हैं।

चौबे–हाँ, तो तुम बीमार हो न ?

बक्खा–नाहीं, महाराज, हम तौ दिक्क नाइँ हैं; अकेले भैय्या की दुल-हिनि कुछु दिक्कि रहति है। तनिक घरइ चलिके उहि को हाथु देखिके कुछु दवाई दइ देउ; बड़ो पुन्नि हुई है।

चौबे–(रुपये माँगने के लिए हाथ आगे बढ़ाकर) हाँ; तो ?

बक्खा–दीबे कौ हमारे तीर का धरो हइ ? गरीब आदमी हँइ; दवाई दइ देउ; बड़ी मेहरबानी हुइ हइ।

चौबे–हाथ देखे बिना दवा कैसे दी जा सकती है–हाँ, पर उसे हुआ क्या है ?

बक्खा–काहे भाई छब्बा, उहिकउ का हुइ गओ हइ ? का कहित है उहिका ? हाँ ! उहिका गरुदर हुइ गओ है।

चौबे–अरे पागल, यह तो आनन्द की बात है; इसकी भी कहीं कोई दवा होती है ?

बक्खा–बैद महाराज, जउ का कहत हउ ? गांववाले तउ उसइ बड़ी भारी बिमारी बताउत हइँ, केहूकी कोई दवाई नाइँ लगति हइ। तें हू पइ आप कहत हउ कि इहि की का दवाई होति हइ ? महाराज, उहि को पेट फूलि मटका जस भइ गओ, औ कछु खा उत नाइँ। उठतै नाइँ बनति है, अउ जइसे तइसे ठाड़िउ हुई जाइ तौ फिरि बइठो नाइँ जाति है।

चौबे–अरे पागल, फिर मुझे कह कर क्या करता है ? ऐसा तो होता ही है।

बक्खा–नाहीं महाराज, अस न कहु। देखौ उहि कउ कस होइत हुई–जो कुछु उहि, खाई लेति हइ तउ कहि पानी हुई जाति हइ, औ पेट फूलि जाति हइ। आजु लउ सइकरन दवाईँ करि चुके, अकेले तनि-कउ फायदा नाइँ भओ।

छब्बा–हाँ ! हाँ ! ! अब यादि आइ। बैद महाराज, गरूदर नाइँ उहि कउ जरुदर रोग हुइ गओ हइ। अबे तउ कितिउ दवादारू करि चुके, तनिकौ फाइदा नाइँ। उहिकर पेटमाँ इतनो पानी कहां ते पैदा होइत हइ ?

चौबे–(हाथसे रुपये बजानेका इशारा करता है कि रुपये चहिए, रुपये) हाँ, तो तू चाहता क्या है ?

बक्खा–चाहिबो का महाराज ? हम तउ जहे चहत हैं कि तउ कहि कुछु नीकी दवाई मिलि जाई। औ का चहि महाराज ?

चौबे–अरे तू क्या बक रहा है–कुछ समझ में नहीं आता।

बक्खा–महराज, यहु गरीब आदमी तौ है; आप कउ जादाँ दइ का सकत हइँ ? रुपिया दुइ रुपिया दइ दिहइँ। जइ दुइ रुपिया अभइ यहु उधार लइ आय हइँ; सो लइ लेउ, अउ उसइ देखिके कछु नीकी दवाई दइ देउ।

चौबे–अब मेरी समझ में आया कि इसकी स्त्री को जलोदर रोग हो गया है; और उसके लिये तुम दवाई माँगते हो। तुम जब से उहिकउ, तुहिकउ बक रहे हो–तुम्हारी यह देहाती बोली समझता कौन है? उसे ज्वर तो नहीं आता, और गला रुँध कर बोल तो नहीं रुक गया है?

छब्बा–जरु अरु तउ कुछू नाइँ आउति है।

बक्खा–जीभउ नाइँ लगति है।

चौबे–अच्छा; अब क्या दवा चाहते हो?

बक्खा–हाँ, महाराज।

चौबे–यही चाहते हो न तुम कि वह भली चङ्गी हो जावे?

बक्खा–महराज, एही के लये तउ हम आये हइँ।

चौबे–अच्छा लो यह चूर्ण ले जाओ, इस के खिलाते ही आराम होगा।

बक्खा और छब्बा–महराज, इहि भभूति से का हुइ हइ? दुइ रुपिया लइ के जहे दयो? जानइँ जउ का हइ?

चौबे–तुम गँवार इसकी परख नहीं कर सकते–इतनी तुम में बुद्धिही नहीं है। इस में बसन्तमालिनी, अभ्रक, कान्तिसार, प्रवाल और मौक्तिक सभी भस्म पड़ी हैं—इस में चिताभस्म की भी थोड़ीसी मात्रा मिली है।

बक्खा–बहु ठीक महराज, बहु ठीक। आपने बड़ी किरपा करी।

छब्बा–अच्छा महराज, तउ फिरि हम जाइ के अभँइँ उसइ दवा खवाउत हइँ?

चौबे–आओ खिलादो! दवा तो ऐसी शर्तिया दी है, कि जिस का नाम। इतने पर भी यदि मर जावे, तो समझना उसकी आयु ही इतनी थी। उसे विधाता भी नहीं बचा सकता।

(दोनों प्रस्थान करते हैं, और ज्यों ही वैद्यराज अपने डेरे पर पहुँचते हैं, त्यों ही मथुरिया बुलाने आती है।)

मथुरिया–वैद्यराज, जल्दी चलिए; आपको सेठजी बुला रहे हैं।

चौबे–क्या और कोई बीमार हो गया?

मथुरिया–अरे! और बीमार कौन होगा? उसी गुलाबदेइ के लिए बुलाते होंगे।

चौबे–मैं ने समझा कदाचित् तुम स्वयं बीमार होकर औषधि लेने आई हो। अच्छा एक बार बीमार होकर देखो तो सही कि श्रीमान् वैद्यराज की दवा कैसे शर्तिया आराम पहुँचाती है!

मथुरिया–परमेश्वर बचावे, तुम्हारी दवाई से!

चौबे–एक बार खाओ तो सही; देखूं तुम्हारा हाथ।

मथुरिया–मैं न दिखलाऊंगी, चलो पहले उसी गुलाबदेइ का हाथ देखो। बड़ी हाथ देखने की ललक है!

चौबे–उस गुलाबदेइ की खबर लेने के लिए अपने शिष्य को भेजे मुझे मुद्दत हो चुकी! पर तुम्हारा हाथ—

मथुरिया–मैं यह चली, ऐसा तो मैंने आग्रह ही नहीं देखा!

(जाती है।)

चौबे–नहीं तो नहीं सही। तुम्हारी तक़दीर ही खोटी है, तभी तो तुम दवा के नाम से छड़कती हो। हम सरीखों की दवा भाग्यवान पुरुषों को ही बदी है।

(प्रस्थान करता है।)

द्वितीय गर्भाङ्क।

[स्थान—सूमड़चन्द की बैठक।]

सूमड़चन्द–आइए वैद्यराज, मैं बड़ी देर से आप का रास्ता देख रहा हूँ!

चौबे–मैं एकान्त में बैठा हुआ औषधियों के प्रयोग का विचार कर रहा था! हाँ गुलाबदेइ की तबियत कैसी है?

सूमड़चन्द–आज तो तबियत और दिनों से ज्यादह खराब है।

चौबे–यह बहुत ठीक है। जान पड़ता है औषधि अपना प्रभाव पहुँचा रही है !

सूमड़चन्द–कुछ समझ में नहीं आता ! उसे तो कष्ट हो रहा है, और आप कहते हैं कि बहुत ठीक है ?

चौबे–यह बात ऐसी ही है जो तुम्हारी समझ में जल्दी नहीं आ-सकती। पर तुम इस तरह न घबड़ाओ। मेरे पास एक से एक बढ़कर औषधियां हैं । हाँ, वह चेला–दवाइयां कूटनेवाला–कहां है, जिसे मैंने बहुत पहले भेजा था ? (इसी समय स्वाँग बनाये हुए मनोहर प्रवेश करता है) यह आगया।

सूमड़चन्द–क्या यही आपका शिष्य है ?

चौबे–हां, (इतने में मथुरिया प्रवेश करती है।)

मथुरिया–अरे महाराज गुलाबदेइ तो बगीचे में घूमने के लिए स-ङ्केत करती है !

चौबे–अच्छा, मैं, पहले ही जानता था कि आज की दवा शिथिल न रहने देगी–इसी से अब चलने फिरने की इच्छा प्रकट करती है। घड़ी-भरमें ही वह बोलने की इच्छा व्यक्त करेगी और मजेमें बात चीत करने लगेगी। जाओ, उसे यहां बुला लाओ। या चलो न सभी लोग बगीचे की ओर चलें ? (जाते हैं।)

तृतीय गर्भाङ्क।

[स्थान–बाग; सूमड़चन्द, गुलाबदेइ, मनोहर, मथुरिया और चौबेजी प्रवेश करते हैं।]

चौबे–गुलाबदेई, जाओ; बगीचेमें जहां चाहो घूमो। छोटेलाल, तुम भी इनके साथ रहो और ध्यान से देखो कि सबेरे जो औषधि दी है, उसने कैसा असर किया–कैसे लक्षण हैं। तब फिर विचार करेंगे कि

अब कौन सी दवाई दी जावे ! हम और सेठजी यहीं घूमेंगे, और छोटे ज़रा दूरतक चले जाना; इस से मिहनत होगी और रक्त सञ्चालन होने से दवा भी जल्दी भिदेगी। सेठजी, यह हमारा चेला बड़ा ही चतुर है। अब देखिएगा, वह कैसा अच्छा काम करता है। अच्छा अब इन्हें घूमने दीजिए; जब तक ये घूमते हैं, तबतक हम आप को वैद्य लोगोंका चरित्र सुनाते हैं।

(सूमड़चन्द का हाथ पकड़कर रङ्गभूमि की दूसरी ओर जाता है। और ज्योंही लड़की को देखने के लिये सूमड़चन्द पीछे की ओर देखता है; त्योंही वह उँगलियां झटक कर अथवा उसकी गर्दन पकड़ अपनी ओर करके कहता है कि हमारी बातों को ध्यान देकर सुनो; तुम तो वहां ताकते हो। गुलाबदेइ और मनोहर दूसरी ओर जाते हैं।)

(ज्योंही सूमड़चन्द पीछे लौटकर देखने लगता है त्योंही वह उसकी उँगिलयां मसक कर कहता है) इधर देखिए ! आप तो सुनते ही नहीं ! वैद्योंमें आजकल इस बातपर बड़ा विवाद हो रहा है कि बीमारी पुरुषों की जल्दी अच्छी होती है या स्त्रियों की ? किसे निरोगी करने में अधिक मिहनत–दौड़ धूप करनी पड़ती है। (सूमड़चन्द फिर से लौट कर देखता है और वह चट से किटकिटाकर उँगलियां दबाता है) अजी आप तो सुनते ही नहीं ? कितने ही कहते हैं कि "स्त्रियां" और बहुतेरों की सम्मति है कि "नहीं, पुरुष"। मैं कहता हूँ, स्त्री और पुरुष दोनों ही; क्योंकि कृफवातपित्तादि जनित दोषों से उत्पन्न होनेवाले रोगों की प्रबलता स्त्रीजन के द्वारा परिहरणीय होने के कारण "यद्रात्र्या पापमकार्षं तद्रात्र्यात्प्रतिमुच्यते," इस निघण्टुके वाक्य के अनुसार रात्रि में उदय होनेवाले गुरु और मङ्गल के स्थानपर अवलम्बित रहती है। इसलिए स्त्रियों की रोगसम्बन्धी आधि व्याधि से परामर्श होकर......

गुलाबदेई–छिः छिः मेरा मन कभी नहीं बदल सकता।

सूमड़चन्द–(इसी समय उसे देखकर) अरे! वह बोली; यह उसी

की बोली है। उसके ओंठ ऐसे हिलते हैं मानो वह बातचीत करती हो। महाराज, मैं आपके गुण गाया करूंगा। आप की दवाइएं शर्तिया आराम करती हैं; अब मैं इसका बदला कैसे चुका सकूंगा ?

चौबे–(बड़े घमंड से आँखें मटका कर सिर हिलाता हुआ) क्यों तुम्हीं तो कहते थे कि यह कैसी औषधि है–यह तो भङ्ग है ? अब आया आपके ध्यान में कि मेरी दवाइयों में कैसा असर है ? उस समय तो मैं मौका न देख इसी लिए चुप हो रहा था कि अवसर पर औषधियां अपना गुण आप प्रकट कर लेंगी; मैं क्यों नाहक विवाद कर माथा पच्ची करूं ? यदि केवल भङ्ग पिलाने से ही गूँगे को बातचीत करने की शक्ति हो सकती तो क्या न था ? उस औषधि के सिद्ध करने में कितने खटराग रचे गये; ओफ़ ! २५) का तो केवल सोनेका वर्क डाला गया है–और मोतियों का तो कुछ हिसाब ही नहीं। फिर उसमें पूर्ण प्रभाव होने के लिए कितना पूजा पाठ करना पड़ा ? पर आपने कह दिया कि यह तो निरी भङ्ग है। मैंने भी कहा, होगी। क्यों कि वह समय और था। अब ईश्वर की दया से मेरा हाथ यशस्वी तो हुआ; मुझे यही बड़ा आनन्द है। कहना चाहिए ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी।

गुलाबदेई–(दौड़ती हुई आती है) दादा, ओ दादा, अच्छा हुआ जो आज इतनी जल्दी मुझसे बातचीत करते बनने लगी। मैंने बहुत दिनसे मनमें निश्चय कर रक्खा था कि हे भगवान, यदि आप की कृपा से मुझे वाक्शक्ति प्राप्त हो जावे; तो मैं अपने दादा से कहूंगी कि "मेरा विवाह मनोहरलाल ही के साथ करना"।

सूमड़चन्द–(हकपका कर) अयं ?

गुलाबदेइ–अयं नहीं; प्राण भले ही चले जवें; पर मैं अपना प्रण नहीं छोड़ सकती !

सूमड़चन्द–क्या कहा ?

गुलाबदेइ–मेरा विचार अब टल नहीं सकता !

सूमड़चन्द–परन्तु यदि........

गुलाबदेई–मेरा अटल प्रण हो चुका है।

सूमड़चन्द–परन्तु मैं तो............

गुलाबदेइ–आप कुछ भी क्यों न कहैं; मैं अपनी टेक न छोड़ूंगी।

सूमड़चन्द–मैं बचन दे चु.........

गुलाबदेइ–व्यर्थ है।

सूमड़चन्द–वह तो अ.......

गुलाबदेइ–मैं एक न मानूंगी।

सूमड़चन्द–अब ?........

गुलाबदेइ–मेरे गले में रस्सी बाँधकर यदि आप चाहें तो कुएं में भले ही लटका सकते हैं; जिस प्रकार आप चाहें प्राण ले लें; यह मंजूर है; पर मैं अपना विचार नही बदल सकती! जिसे मैं नहीं देखा चाहती; आप उसीको मेरे जीवन का साथी क्या समझ कर बनाया चाहते हैं? यह कभी न होगा! आप वृथा क्रोध, आग्रह और हठ न करें; इस का अब कोई अच्छा परिणाम नहीं हो सकता। मैं जो एक बार कह चुकी उसे जबतक शरीर में प्राणवायु का सञ्चार होता रहेगा तबतक निबाहूंगी। कितने ही कष्ट मुझे क्यों न सहने पड़ें: पर मैं अपने निश्चय से कभी न टलूंगी।

सूमड़चन्द–गुलाबदेइ, देखो मैं........

गुलाबदेइ–(कठोर स्वर से) आप कुछ भी क्यों न करें, मैं आप की बात पर अब राजी नहीं हो सकती। आप नाहक माथा पच्ची कर अपनी और मेरी खोपड़ी खाली कर रहे हैं।

सूमड़चन्द–अरे गज़ब रे गज़ब! पहले तो हमें इस की बात चीत सुनने की लालसा थी। इतने उपाय कर हारे; तब कहीं इसे बात चीत करने का सामर्थ्य हुआ। और अब यह बोली तो क्या? फूल झरने के बदले पाषाण गिर रहे हैं! हे भगवान, अब मैं क्या करूं? मुझ से तो इस

की बातें सुनी नहीं जाती। हे वैद्यराज, अब आप मेरे उपर एक उपकार और करें; जिस औषधि के सामर्थ्य से आपने इसे वाचाशक्ति प्रदान की है अब उसी प्रकार की किसी औषधि से इसे आप फिर गूँगी कर दें। यही एक उपाय है; नहीं तो बड़ी फ़जीहत होगी।

चौबे–सुनिए सेठ साहब, रोगी को आराम करने के लिये हम उत्पन्न हुए हैं; भले चङ्गे को बीमार करने के लिए नहीं। यदि हम लोग ऐसा विपरीत आचरण करने लगें; तो सारा नाम–इज्जत–मिट्टी में मिल जाय! इससे कृपाकर हमसे ऐसी बात न कहिए! और अब तो यह–इसे गूँगी बनाना–हमारे बाबा से भी नहीं हो सकता। हाँ, यदि आप इस से रक्षा पाना चाहें याने इसकी बातें न सुनना चाहें तो एक उपाय है! मुझसे कहिए तो आप को बहिरा बना सकता हूँ; पर आप इसे पसन्द न करेंगे।

सूमड़चन्द–वाह! अच्छा उपाय बतलाया है; गुलाबदेइ, क्यों तू ने क्या यह समझ रखा है कि मैं अब.........

गुलाब–मेरी समझ को न पूछिये! पर मैं अब आप की एक भी बात उस सम्बन्ध में न मानूँगी।

सूमड़चन्द–मेरा नाम तभी है जब मै उसी महादेव के साथ तेरा विवाह करूं!

गुलाब–हां दादा! मैं भी कहती हूँ कि मेरा भी नाम तबही है जब मैं प्राण दे दूं पर उस के साथ विवाह न करूं।

चौबे–वाह सेठजी, तुम भी इतने बूढ़े होकर लड़कपन करने लगे। चलो यहां आओ; उसे तो अभी ज़रा वायु का प्रकोप होगया है। इसी से वह बड़बड़ा रही है। मैं अब दूसरी मात्रा देता हूँ, इस से तुरन्त ही वायु प्रशमन हो जावेगा१ मेरे पास कौन से रोग की औषधि नहीं है?

सूमड़चन्द–अहा क्या आपके पास इसकी भी दवा है?

चौबे–शर्तिया, आप ज़रा मेरे पास धीरज धर कर बैठिए। अपने चेलेसे मैं अभी इलाज कराता हूँ–आप क्यों घबड़ाते हैं? (वेषधारी

मनोहर से) अरे यहां आओ; तुम अभी मनोमोहक काढ़ा बनाकर जल्दी इसे पिला दो। देखो बिलम्ब न हो। इसे वायु के प्रकोप ने घेर लिया है। अब यदि अपनी इच्छा के अनुसार इसे चङ्गी करनी हो तो शीघ्रता से चिकित्सा आरम्भ कर दो। देखो इसमें ज़रा भी देर न होने पावे। पहले थोड़ा सा पलायन मूल लेकर उस में थोड़ासा चौर्य परिणय का स्वरस मिला दो। यदि उसे यह औषधि अधिक कड़वी लगे और वह इसे पीना स्वीकार न करे तो मीठी मीठी बातों से, उसे मोहित कर यथाशक्य प्रयत्न कर उसे पिला ही देना। और शेष अनुपान तू जानता ही है। बड़ी सावधानी से दवा खिलाना; नहीं तो मामला चौपट हो जानेका डर है। जाओ, मथुरिया इसे भी लिवा ले जाओ। तबतक हम और सेठजी यहां पर दिल बहलाते हैं। (मनोहर, गुलाबदेइ और मथुरिया प्रस्थान करते हैं)

सूमड़चन्द–क्यों वैद्यराज, यह कौनसी दवाइयां हैं? मैंने तो कभी इनके नाम भी नहीं सुने!

चौबे–अजी, इनका नाम भी गुप्त रहता है। तुम सुनोगे कहांसे? वैद्यों के पास ये चुटकुले छिपे रहते हैं।

सूमड़चन्द–वाह! पर लड़की को एकाएक कैसा उबालसा आगया? मैं तो भौंचक्कासा हो गया!

चौबे–अजी एक तो वह यों ही नादान (कमउम्र) है; दूसरे बीमार, और तीसरे वायु का प्रकोप होगया।

सूमड़चन्द–महाराज मैं आपसे क्या कहूँ; यह उस भिखारी मनोहर को............!

चौबे–इस संसार का चरित्र बड़ा ही अद्भुत है। शास्त्रों में लिखा है "स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जा,...........।

सूमड़चन्द–ज्योंही मैंने यह बात सुनी त्योंही मैंने इसे नज़र कैद करा दिया। मुझे यह नहीं रुचता।

चौबे–बहुत ठीक है। ऐसे समय पर ऐसा ही करना चाहिए।

सूमड़चन्द–ऐसा कड़ा प्रबन्ध करा दिया कि एक दूसरे को देख भी न सकें।

चौबे–अजी ऐसा तो होना ही चाहिए। सिवाय इसके और उपाय ही क्या था?

सूमड़चन्द–इस अवसर यदि मैं ज़रा भी असावधान रहता तो लोग मुझे निरा पागल समझते।

चौबे–इसमें क्या सन्देह है?

सूमड़चन्द–ये आजकल की लड़कियां जो न कर डालें सो थोड़ा है।

चौबे–सत्य है। आपने बड़ी होशियारी की।

सूमड़चन्द–हमने सुन रक्खा है कि वह इससे बात चीत करने के लिए हमारे मकान के आस पास चक्कर लगाया करता है।

चौबे–निरा मूर्ख है।

सूमड़चन्द–उसके सारे प्रयत्न निष्फल होंगे।

चौबे–(जोरसे हँसकर) हः हः हः होने ही चाहिए।

सूमड़चन्द–मैं तो अब परस्पर देख भाल भी न होने दूँगा।

चौबे–आपके आगे वह कर ही क्या सकेगा? कहां आपकी बुद्धि और कहां उसका सामर्थ्य?

[इतने में धाँधू दौड़ता हाँफता हुआ आता है]

धाँधू–मालिक, ए सेठजी, बड़ा दगा हो गया, गुलाब चली गई। अब क्या करें?

चौबे–(घबड़ा कर) अरे! क्या यह सत्य है?

सूमड़चन्द–हमें विश्वास नहीं होता!

धाँधू–गई, गई! उसी मनोहरलालके साथ गई। वह इनका शिष्य न था, वह तो मनोहर ही निकला!

सूमड़चन्द–हाय! मुझे बेतरह धोखा दिया—मैं ठगा गया।

आह ! मुझे इस तरह फँसाया ! अरे दौड़कर पुलिस में खबर दो जिस से वह चोर जल्दी पकड़ लिया जाय। ठहर बदमाश, अब मैं तेरे दाँत खट्टे कर के छोड़ूंगा। तुझे ज़िन्दगी भर याद रहेगी कि भले आदमी के साथ दगा करने का यह फल मिलता है।

धाँधू–अरे बैद, हम तो तुझे भला आदमी समझते थे पर तू तो बड़ा कुटना निकला ! ठहर अब तुझे अभी हवालात की हवा खिलाने का इन्तज़ाम कराता हूँ !

चिरचिरी चौबाइन–(हाँफती हुई दौड़ती आती है) अरे वे बैद कहां गये ? सुना है कि वे यहीं पर कहीं आये हैं। अरे ! तुम तो यहीं बैठे हो !

धाँधू–ऐसे पाजी कहीं वैद्य होते हैं ? अब इसके पैरों में पाँच पाँच मनकी बेड़ियां डलवानी चाहिये।

चौबाइन–क्या कहा पाँच मनकी ?

(अपने पति चौबजी की ओर देखकर) तुम यह क्या कर बैठे ? जहां देखो तहां कुछ न कुछ उपद्रव ही किया करते हो। यहां भी शांत न रह सके ! लो बेड़ियां पहनाने की तैयारी हो रही है !

चौबे–लक्षण तो ऐसे ही दीखते हैं।

चौबाइन–मैं पूछती हूँ ऐसा क्यों होता है ?

चौबे–अभी आखों से खुद देख लेना !

चौबाइन–अपना आपो और बापो छोड़कर तुम्हें यह क्या सूझ पड़ी ?

चौबे–चल निकल; तू यहां भी सताने लगी ?

चौबाइन–मैं ऐसे समय यहां से क्यों जाने लगी जब कि आप को मोटी मोटी बेड़ियां पहनाई जानेवाली हैं ? आपको कदाचित् उतना बुरा न लगेगा, जितना मुझे भला मालूम होगा।

चौबे–बतला तो अब मैं क्या करूं !

धाँधू–(चौबेजी से) अब पुलिस का कोतवाल आता होगा ! ज़रा

और गप्पे हाँक लो, फिर अँधेरी कोठरी में धाँधे जाओगे; तब इस लुच-पन का नतीजा मालूम होगा !

चौबे-(उसके पैर छूने जाता है) भाई, माफ करो, एक भूल होगई। तुम्हें दो चार डण्डे लगाने हों तो लगालो। पर अब मेरी फज़ीहत न करो। मैं विनती करता हूँ। गरीब आदमी हूँ।

धाँधू-अब मारका नाम सुनते ही गरीब बनने लगा। हाँ, तू बड़ा गरीब है!! अब वह कोतवाल जान और तू जाने-मैं कुछ नहीं समझता। अरे यह क्या?

[इसी समय गुलाबदेई और मनोहर प्रवेश करते हैं]

मनोहर-लीज़िए सेठजी, इस अपनी कन्याको सम्हालिए। पहले हमारा यह विचार था कि यहां से भागकर चौर्यविवाह कर लें पर हमने अब अपना वह निश्चय त्याग दिया है। मुझे यह अच्छा नहीं प्रतीत होता कि आपकी कन्या को चोरी से निकाल ले जाऊं। आप की सलाह से विवाह होने में ही आनन्द मान, आप से आज्ञा माँगने आया हू! अब आप से इतना और निवेदन कर देना चाहता हूं कि मैं एक बड़ी भारी जायदाद का मालिक होगया हूं! अब हमारे चाचाजी सर्वस्व त्यागकर गङ्गा किनारे कुटी में भगवद्भजन करते हुए अपने समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। देखिए ये सब कागज़ात् हाज़िर हैं।

सूमड़चन्द-वाह! वाह! मनोहरलाल, ईश्वर की दया से तुम इतनी जल्दी धनवान् होगए। अब तुम्हीं को मैं कन्यादान दूंगा; तुम इस योग्य होगए। मैं जानता था कि तुम इस भगदड़ को कभी पसन्द न करोगे!

चौबे-और हम भी मुक्त कर दिए जावें!

सूमड़चन्द-अच्छा जाओ; अब तुम्हारी रोक नहीं है। हाँ, तुम्हें १००) इनाम भी मिलेगा-मनोहर! इन्हें १००) दे दो।

चौबाइन-और मुझे? मेरे ही उपाय से तो ये वैद्य बने हैं।

चौबे-चल, निकल यहां से। जो अभी मुझे मिलनेवाला था, वैद्य

बनाने का वही इनाम अलबत तुझे मिलसकता है। ससुरी, हमें जो मार सहनी पड़ी; उसकी याद जन्मभर नहीं भूल सकती; आह ! अबतक दर्द होता है। मैं तुझसे इसका पूरा बदला लूंगा। याद रख !

मनोहर--(चौबेजी से) भई, अब कोई किसी पर क्रोध न करो, गईगुजरी बातों में रक्खा ही क्या है ? इनके वैद्य होने के बदौलत ही आजका दिन देखने को मिला।

चौबे--अच्छा तो ठीक है (गाता है)

होय विवाह आज सुघड़ी में गुलाब और मनोहर को।
बीती हुई पुरानी बातें छोड़ करूं तब आदर को ॥
ऐसो प्रेम परस्पर होवे जैसो नवल बधूवर को।
आनंद से बीते यह जीवन करि विनाश दारिद्र को ॥
गाँजा, भाँग, तमाखू तीनों करो तयार सयानी।
जिनके सेवन से सुर, नर, मुनि भये महा गुणखानी ॥

समाप्तम्

श्रीहिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारक मण्डली–

द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकों की सूची।

१–हिन्दी–नवरत्न

अर्थात्

हिन्दीभाषाके नौ सर्वोत्तम कवियोंके आलोचना-पूर्ण जीवन चरित्र।

लेखक

पंडित गणेश बिहारी मिश्र,
,, श्याम बिहारी मिश्र, एम० ए०,
,, शुकदेव बिहारी मिश्र, बी० ए०।

इस पुस्तक की प्रशंसा करना व्यर्थ है। इसके लेखकों के नाम ही इसकी उत्तमता के काफ़ी प्रमाण हैं। आजतक हिन्दीभाषा में ऐसी पुस्तक न प्रकाशित हुई थी। इसमें क्रम से तुलसीदास, सूरदास, देव, बिहारीलाल, भूषण, केशवदास, मतिराम, चन्दबरदाई और हरिश्चन्द्र इन नौ कवियों के आलोचना–पूर्ण चरित्र दिये गये हैं। कवियों के चरित्रों के साथ ही साथ उनकी कविता की विद्वता पूर्ण समालोचना पढ़नेका लाभ पाठक इसके द्वारा उठा सकते हैं। साहित्य के प्रेमी तथा साधारण पाठकों के लिये यह पुस्तक समान लाभ-दायक है। पुस्तक जैसी उत्तम है वैसी ही उसकी छपाई व जिल्द आदि भी बढ़ियां है। पुस्तक तेरह सुन्दर हाफ़टोन चित्रों से सज्जित की गई है। कपड़े की जिल्द तथा सुनहरी अक्षरों से उसकी शोभा और भी बढ़गई है। बुकमार्कर तथा कव्हर इत्यादि सहित ४५० पृष्ठकी पुस्तक का मूल्य केवल रु० २॥) रक्खा गया है।

२—अर्वाचीन-इतिहास-माला।

(प्रथम पुष्प)

भारतवर्षका अर्वाचीन इतिहास।

ब्रिटिश-काल

[भाग पहिला]

बड़ोदा राजपुत्र-विद्यालयके शिक्षक, श्रीयुत **गोविन्द सखाराम सरदेशाई**, बी. ए. का नाम मराठी-साहित्य-संसार में प्रसिद्ध है। आप एक प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता हैं। मराठी भाषा में आपने भारतवर्ष का एक बृहत् इतिहास लिखा है, वह कई भागों में लिखा गया है। कुछ भाग प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ प्रकाशित किये जाने वाले हैं। प्रथम भाग में मुसलमान-शासन तथा दूसरे भाग में मराठा-शासन का इतिहास दिया गया है। तीसरे भाग में ब्रिटिश-शासन का इतिहास रहेगा। इसभाग का कुछ हिस्सा ब्रिटिश रियासत पूर्वार्ध के नाम से हाल ही में प्रकाशित हुआ है। यह पुस्तक इसी के कुछ भाग का हिन्दी अनुवाद है। ऐसे समय में जब कि इतिहास के ज्ञान का महत्त्व सर्वसाधारण पर अच्छी-तरह प्रकट है, हम इस पुस्तक की उपयोगिता के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं देखते। पुस्तक पढ़ने ही पर पाठकों को इसकी उपयोगिता का ज्ञान होगा। इसमें छह अध्याय हैं, जिन में क्रम से 'प्राचीन व्यापार की उथलपथल,' 'यूरोपियनों की पहली खटपट,' 'मलाबारका प्राचीन बृत्तान्त,' 'पोर्तुगीज राज्य की स्थापना,' पोर्तुगीज शासन,' तथा 'पोर्तुगीज राज्य की गुणदोष चर्चा,' आदि विषयों का वर्णन किया गया है। इसके बाद दूसरे भाग में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के समय का इतिहास अगामी वर्ष में प्रकट किया जायगा। जिल्द सहित पुस्तक की पृष्ठ-संख्या ३२५ है। इस पुस्तक में अनेक ऐतिहासिक बृत्तान्त ऐसे हैं जिन के सम्बन्ध में हिन्दी भाषा में अबतक एक अक्षर भी नहीं लिखा गया है। पुस्तक एक बार पाठ करने से पाठकों के ऐतिहासिक ज्ञान में बहुत कुछ वृद्धि होगी यह हम निश्चयपूर्वक कह सकते है। मूल्य रु० १) मात्र। पता—

मंत्री, श्रीहिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारक मण्डली खंडवा सी. पी.